"सफलता के चमत्कार सिखाने वाली एक अनोखी पुस्तक"

पढ़कर निहाल व मालामाल हो गये

राकेश शर्मा

पढ़कर निहाल
व
मालामाल हो गये

संस्करण : 2004 (प्रथम)

ISBN : 81-89180-00-2

प्रकाशक : मोनार्क इंटरनेशनल सक्सेस ऑर्गनाइजेशन
सी, 89-90, नेहरू नगर, आर.पी.ए. रोड़
जयपुर-302016 (राजस्थान) भारत

दूरभाष : 91-0141-3701649

E-mail : monarkmonarchy@yahoo.co.in

मुद्रक : हरिहर प्रिण्टर्स,
जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर,
जयपुर-302 004
फोन : 0141-2600850

मूल्य : 75/- (पिचहेत्तर रुपये मात्र)

इस पुस्तक को आप क्यों पढ़े ?

- चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास करने वाली एक महान पुस्तक है।
- इस किताब को पढ़ने वाला व्यक्ति अथाह धन सम्पदा का मालिक बन सकता है।
- इस पुस्तक को पढ़ने से आध्यात्मिक मार्गदर्शन, स्तुति करने का धर्म लाभ मिलता है।
- इस पुस्तक को पढ़ने से सच्चरित्रत्ता प्राप्त होती है, सच्चरित्रता अथाह धन सम्पदा व मोक्ष प्रदान करा सकती है।
- यह पुस्तक आपका जीवन बदलकर आपको दुनियाँ के चुनिन्दा महान लोगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सकती है।
- इस पुस्तक को पढ़ने से आप जीवन में घाटा खाने से बच सकते हैं।
- मुर्दों को जिन्दा बनाने वाली व वास्तविक खुशहाली पाने के रहस्य उजागर कर प्रेरणा प्रदान करने वाली यह एक अद्‌भुत पुस्तक।
- इस पुस्तक में प्रभावी, सरल एवं सटीक वैज्ञानिक तरीकों व उदाहरणों के साथ मनुष्य की दिमागी ताकत को बढ़ाने की पद्धति व रहस्यों को सिखाया गया है। इन रहस्यों को जानकर दुनियाँ में लाखों लागे मनचाही सफलता, सुख, मोक्ष, प्रशंसा और अथाह दौलत हॉसिल कर चुकें हैं। दुनियाँ के महान सफल लोगों की उन खूबियों व आदतों को समेटकर इस पुस्तक के माध्यम से आप तक पहुँचाया जा रहा है।
- इस महान चमत्कारी पुस्तक में बताये गये रहस्य उन्नति का सही रास्ता दिखाते हैं।

पढ़कर निहाल व मालामाल हो गये।

समर्पण

ॐ नमोः नारायणाय पुरूषाय महात्मने।
विशुद्ध सत्वधिष्ण्याय महाहंसाय धीमहि।।

हम नमस्कार पूर्वक ओंमकारस्वरूप भगवान नारायण का ध्यान करते हैं, जो विशुद्धचित्त में निवास करते हैं। सबके अंतर्यामी हैं, तथा सर्वव्यापक एवं परमहंस स्वरूप हैं।

यह पुस्तक प्रेरण की देवी माँ भगवति एवं सृष्टि के आधार, सर्वव्यापक श्रीराधेगोबिन्द, श्रीलक्ष्मीनारायण को उनके द्वारा प्रदान की गई प्रेरणा के लिए समर्पित है।

पढ़कर निहाल
व
मालामाल हो गये।

लेखक : राकेश शर्मा

MONARK INTERNATIONAL SUCCESS ORGANISATION

मोनार्क इंटरनेशनल सक्सेज ऑर्गेनाइजेशन

अनुक्रमणिका

पढ़कर निहाल व मालामाल हो गये।

लेखक के दिल से ....

जिस प्रकार बिना पढ़ी पुस्तक और दूसरों के पास रखा हुआ धन समय पर काम नहीं आता। उसी प्रकार नैतिक मूल्यों के बिना प्राप्त की गई सफलता और सच्चरित्रता के बिना प्राप्त की गई श्रेष्ठता। हमें ढंग का नहीं ढोंग का जीवन जीना सिखाती है।

पुस्तकें और अच्छे लोगों की संगत ऐसे स्रोत हैं जहाँ से श्रेष्ठ विचार प्राप्त होते हैं।

इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में उन रहस्यों को उजागर किया गया है जिन्हें सीखकर दुनियाँ में हजारों लोग अपनी मन चाही कामयाबी प्राप्त कर बुलंदियाँ हॉसिल कर चुके हैं। **इस पुस्तक को पढ़ने पर पाठक के मस्तिष्क में मूल्यवान बनाने वाले सकारात्मक सोच के बीज अपने आप उगते चले जाते हैं। चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के ये ही बीज एक दिन वृक्ष बनकर आपको जीवन में कदम-कदम पर कामयाबी दिलाते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ये ही बीज मास्टर चाबी बनकर उलझी हुई समस्या को सुलझाने में मद्‌दगार साबित होते हैं। जिससे पाठक को उसके मन चाही सफलता, मान-सम्मान, धन-दौलत, इज्जत-शोहरत, सुख-शान्ति, की प्राप्ति होती है। आफत में फँस जाने पर इन रहस्यों से साहस, धैर्य और आत्म विश्वास को बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है।** पुस्तक में बताये गये सिद्धान्त स्वतः आपको रास्ता दिखाकर कामयाबी दिलायेंगे तथा आपको जीवन में घाटा खाने से बचायेंगे। जब लेखक को उसके ही प्रिय

जन ने धोखा देकर जेल भेजने की साजिश रची थी तो कामयाबी का सिद्धान्त कि **हार मानने से पहले विशेषज्ञ की सलाह ले लेनी चाहिये** को अमल में लाने से लेखक को नई दिशा मिली और लेखक अपनी समस्या से ऐसे उबर गया जैसे एक अंधा व्यक्ति सूखे कूएँ से बाहर निकल आता है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक आपका मार्गदर्शन कर जीवन में तेजी से आगे बढ़ने के लिए एक सुरक्षित रेल मार्ग की तरहाँ रास्ता दिखायेगी।

यह पुस्तक आपको पढ़ते समय स्वत: ही आपकी खूबियों व कमियों से रू-ब-रू करायेगी। जब भी आप असमंजस की स्थिति में फँसे होंगे, तब इस पुस्तक में लिखे सिद्धान्त आपके दिलो-दिमाग में अवतरित होकर आपको कामयाबी का रास्ता सुझायेंगे। ध्यान रखिये, अपनी कमजोरियों से बाहर तभी निकला जा सकता है, जब हमें अपनी कमजोरियों का ज्ञान हो। जीवन में कमियों और खूबियों का अंतरद्वन्द हमें आगे नहीं बढ़ने देता है, इसी कारण से हम ब्रेक पर पैर रखकर गाड़ी में रेस देते रहते हैं। यह पुस्तक पाठक को उसकी अच्छाइयों व बुराइयों से आत्मसात कराती है। इंसान इस पुस्तक से प्रेरित होकर अपनी दुर्बलताओं को निकाल कर दूर भगा सकता है, और अपनी विशेषताओं को बढ़ा सकता है। इस प्रकार चाहे तो पाठक जीवन में अपनी उन्नति के गतिरोधों को हटाकर अपने जीवन को सफल और खुशहाल बना सकता है। लेखक का जन्म 16 सितम्बर 1964 को राजस्थान राज्य के अलवर शहर में गौड़ ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से ही मध्यम परिवार में जन्म होने के कारण जीवन अभावों से ग्रसित रहा। पहनने के लिए अच्छे कपड़ों का अभाव था तो भर पेट

खाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में बचपन में पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई के कार्य में भी साथ देना पड़ता था। अपनी माता द्वारा समय-समय पर गुनगुनाये जाने वाला प्रेरणा गीत ''एक अकेला थक जायेगा मिलकर बोझ उठाना, साथी हाथ बटाना, साथी हाथ बटाना रे...'' लेखक को अपने परिवार की गरीबी को दूर करने के लिए जमकर काम करने को प्रेरित करता था। दसवीं कक्षा तक नियमित विद्यार्थी के रूप में शिक्षा प्राप्त की जा सकी। पढ़ाई के साथ-साथ पार्ट टाइम, फुल टाइम नौकरी करके बी.कॉम. स्तर तक की शिक्षा तो पूरी करने में सफलता हॉसिल कर ली गई लेकिन **सही मार्गदर्शन और मन में कुंठित विचारधारा के बोझ के कारण चरित्र और व्यवहार कब और कैसे नकारात्मक बन गया**, खुद लेखक को पता ही नहीं चला। परिणामस्वरूप कदम-कदम पर लज्जित होना पड़ता था, नकारात्मक नजरिया और बोलने बात करने के सही ढंग के अभाव में लोगों से थप्पड़ भी खाने पड़े। इसका कारण लेखक में खुद में आत्म-सम्मान की कमी थी। **आत्मसम्मान की भूख को मिटाने का रहस्य, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करके, उन्हें आदर-सम्मान प्रदान कर, उनकी खूबियों का बखान कर, आकर्षक दिखने, अच्छे कपड़े पहनकर अपने चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव लेकर घूमने से अपने आत्म-सम्मान की कमी को पूरा किया जा सकता है, ने लेखक का जीवन ही बदल दिया और आज लेखक को चाहे कंधा देने वाले चार हों पर श्रद्धान्जली देने वाले हजारों हैं।** इन रहस्यों को जानकर आप भी अपने प्रशंसकों और अनगिनत सच्चे दोस्तों की संख्या को बढ़ा सकते हैं।

हमें अपने मन का विश्वास बढ़ाने के लिए यह मालूम होना आवश्यक है कि हमारे अंदर क्या अच्छाइयाँ हैं व क्या कमियाँ है? हम अपनी एक भी अच्छाई पर पूरा विश्वास कर ले तो उसके सहारे एक के बाद एक ढेरों अच्छाइयाँ बढ़ाई जा सकती है। क्योंकि अच्छाइयों पर ध्यान केन्द्रित करने से अच्छाइयाँ बढ़ जाती हैं और कमियों पर ध्यान केन्द्रित करने से उन्हें कम भी किया जा सकता है। सारा खेल हमारी सोच और नजरिये का है। **हमारी अच्छाइयाँ हमारे लिये खुशनुमा वातावरण बनाती है जबकि हमारी कमियाँ हमारे लिये गिलानी और भय का वातावरण बनाती हैं।** यह पुस्तक आपको सच्चरित्रता के पाठ से अपने आप पर पूर्ण विश्वास करना सिखाती है।

यह देखा गया है कि मनुष्य जीवन भर अपने आप को दूसरों के द्वारा पसंद नहीं किये जाने के डर से डरा रहता है। हम अपना प्रत्येक कार्य दूसरों की पसंद को सामने रखकर करते हैं। यह आदत हमारे आत्म विश्वास की कमी को दर्शाती है। हमारे दिलो-दिमाग में डर छाया रहने से, डर और अधिक डर को बढ़ा देता है। इस पुस्तक में दिये गये सिद्धान्त जीवन में आगे बढ़ने के लिए आपको आत्मबल प्रदान करते हैं, डर को कम करते हैं। लेखक ने जीवन में मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हाने के बावजूद भी आगे बढ़ने की प्रेरणा के आधार पर चार बार राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन की विभिन्न स्तर की प्रतियोगी परीक्षाएँ पास करने में सफलता प्राप्त करने के फलस्वरूप पहिले फोरेस्ट डिपार्टमेंट में व बाद में राजस्थान पुलिस विभाग में प्रथम ग्रेड निजी सहायक का पद प्राप्त कर कई प्रशंसा पत्र तो सर्विस में रहते हुए हांसिल कर लिये गये मगर जीवन में सफलता के सिद्धान्तों के ज्ञान का

अभाव होने के कारण जीवन असफलताओं से भरा रहा। **सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप कितने सफल हैं बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि आपकी बदौलत कितने लोग सफल हुये हैं।** लेखक भी काफी समय तक वही करता रहा जो लोग कहते रहे या जो लोगों को पसंद था। इससे जीवन एक फुटबाल की तरह बन गया था। **इंसान इस डरने की आदत की वजह से कामयाबी के अवसर आने पर या तो प्रतियोगिता में भाग लेने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता या फिर थोड़ी सी भी बाधा आने पर अपना रास्ता बदल लेता है।** इसी कारण से लेखक का जीवन भी वर्षों तक असहाय और दीन बना रहा था। जब लेखक ने कामयाब बनाने वाली पॉजेटिव एटिट्यूड और पर्सनलिटी डवलपमेंट की इस अनूठी शिक्षा को दुनियाँ के उन महानतम दौलतमंद व सफल लोगों के मुँह से सुनकर, मिलकर और वर्षों तक लगातार सीखकर, विशेषज्ञता हॉसिल करने के बाद प्रशंसा और समृद्धि प्राप्त की तो पाया कि **कामयाबी गैंड़ा (Rhinoceros) मैंटेलिटी के लोगों को मिला करती है, क्योंकि गैंडा एक बार अपने लक्ष्य को चुनने के बाद, उसे टक्कर मारकर यानि उसे पूरा करके ही, पीछे हटता है। चाहे परेशानियाँ कितनी भी आ जाये लम्बे समय तक रूके रहने से ही कामयाबी हॉसिल होती है।**

इस रहस्य ने लाखों लोगों को लम्बे समय तक व्यापार में भी टिकायें रखकर एक बहुत बड़ा नैटवर्क खडा करने में कामयाबी हॉसिल कराई है। मेरा मानना है कि **जो मंदी के समय में टिके रहते हैं वो ही तेजी के समय में कमाते हैं। ध्यान रखिये यदि आप सफलता को नहीं अपनायेंगे तो असफलता आपको अपना लेगी।**

तुफानों से हिल जायें हम वो पत्थर नहीं।
हवाओं से कह दो कि वो अपनी औकात में रहे।

स्वर्ग जाना तो सभी चाहते हैं, मगर स्वर्ग जाने के लिए मरना पड़ता है। कभी भी बिना कुछ कीमत चुकायें कुछ भी नहीं मिलता।

मेरा सुझाव है कि आप इस पुस्तक को कम से कम तीन बार लगातार पढ़कर कीमत अदा करें। पढ़ते समय आपका मस्तिष्क पुस्तक में लिखे हुये जिन विचारों को भी जीवन में हमेशा याद रखने के लिए प्रेरणा सुझाये, उन्हें सर्व प्रथम तुरन्त अंडर-लाईन कर ले या हाई-लाइट कर लेवें। फिर इन अंडर-लाइन किये हुये विचारों को बार-बार पढ़कर, लिखकर, बोलकर दोहराते रहे। इससे ये आपके जीवन का हिस्सा बन जायेंगे। बस, समझों की अब कामयाबी आपसे दूर नहीं है।

इस पुस्तक को पढ़ते समय निश्चित ही आपके मस्तिष्क में स्वतः ही अनमोल विचार आपकी अंत:प्रेरणा से प्राप्त होंगे, जिनसे आपको लगेगा कि यदि ऐसा किया जाये तो आपको भी मन चाही कामयाबी मिल सकती है एवं आप भी तपते रेगिस्तान की मृग-तृष्णा से बाहर निकल सकते हैं। आप इन विचारों को तत्काल एक कागज पर नोट कर लीजिए। अब समझों बन गया काम। यदि आपने ऐसा नहीं किया तो विचारों के लुप्त होने के कारण असफलता के जिम्मेदार आप स्वयं होगें। **विचार बुलबुले की तरहाँ होते हैं जिन्हें सम्भाला नहीं जाये तो शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। याद रखिये, सभी कुछ की शुरूआत विचारों से होती है।** इस प्रकार आप अपनी उन्नति के लिए इस पुस्तक की प्रेरणा से जाग्रत हुये विचारों को नष्ट होने से बचा लेगें।

फिर आप इस पुस्तक को पहले बताये अनुसार तीन बार पढ़कर खत्म कर लें। प्रत्येक बार पढ़ते समय अंत:प्रेरणा से प्राप्त होने वाले विचारों को इसी प्रकार कागज पर लिखते चले जाये। इन विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए एक्शन (Action) की खाद्य डालते ही आपके जीवन में भी सफलता की फसल लहराँ उठेगी। **अगर जीतने का दृढ़ संकल्प हो और प्रयास लगातार किये जाये तो मनुष्य निश्चित रूप से सफल होता है।**

जब आप इस पुस्तक को उपरोक्तानुसार पढ़कर पूरा कर चुके तो आप द्वारा कागज पर लिखे गये विचारों को पुन: **संकल्प (Self Commitment)** के रूप में लिख लेना चाहिये और कार्य पूरा होने तक अपने पास रखकर सुबह: दोपहर व शाम पढ़ते रहना चाहिये। साथ ही इस संकल्प से सम्बन्धित फोटो, चित्र भी एकत्रित कर आपको अपने घर व ऑफिस में आँखों के सामने दिखाई देने वाले स्थानों पर चिपका देना चाहिये। क्योंकि **अवचेन मस्तिष्क चित्रों की भाषा जल्दी समझता है। इससे हमारी मनोकामनाएँ जल्दी ही पूर्ण होती है।**

यह पुस्तक प्रचलन अनुसार पुर्लिंग शब्दों का इस्तेमाल कर लिखी गई है। लेकिन इस पुस्तक में बताये गये 'सफलता के चमत्कार' महिला व पुरूष दोनों पर ही समान रुप से लागू होते हैं। अत: महिलाऐं इस पुस्तक को अपनी सुविधानुसार स्त्रीलिंग रूपी शब्दों में बदलकर व समझकर अपने जीवन में कामयाबी हाँसिल कर सकती है।

□□□

संकल्प
(Self Commitment)

"मुझे यकीन है कि यह '.........' मुझे अब मिल सकता है। मैने इस क्षेत्र के विशेषज्ञों से मालूम कर लिया है कि यह मुझे कहाँ और कैसे मिल सकता है। मैं इस कार्य को '............' दिन '..............' माह '..........' वर्ष तक पूरा करने का अपने-आप से वादा करता हूँ। मैं इस कार्य को पूरा करने के लिए (अमुक-अमुक) जो भी जरूरी काम है-1, 2, 3, 4, 5 आदि उन्हें एक-एक करके पूरा करूँगा। इनके लिए मैं अपना समय, श्रम, ज्ञान, पैसा खर्च करने से पीछे नहीं हटूँगा। मेरे ऊपर मेरे ईष्ट देव की बड़ी कृपा है। मैं वह खुशनसीब इंसान हूँ जिसे यह सफलता का सिद्धान्त मालूम हो गया है। मैं ऊपर लिखे हुये संकल्प (Self Commitment) को दिन में तब तक तीन बार (सुबह, दोपहर व शाम) पढ़ने का संकल्प लेता हूँ जब तक कि मैं इसे प्राप्त नहीं कर लेता। मेरा निश्चय अटल है।"

लेखक का विश्वास है कि इस प्रक्रिया से हमारी 'शंका' प्रबल आस्था में बदल जाती है। मन में परमेश्वर मेरे साथ है के विश्वास का भाव होने से यही आस्था प्रार्थना में बदलकर हमारे अवचेतन मस्तिष्क में बैठ जाती है। **हमारा अवचेतन मस्तिष्क हमारे अंदर बैठे हुये किसी भी प्रबल विचार को साक्षात् उपस्थित कर देता है। संभवतया इसी ताकत के आधार पर भूत का ध्यान करने पर भय का भूत हाजिर हो जाता है तो परमेश्वर का ध्यान करने से परमेश्वर की प्राप्ति होती है। हो ना हो इसी अवचेतन मस्तिष्क की ताकत पर मेवाड़ की रानी मीराबाई, भक्त रैदास, भक्त प्रहलाद, सती द्रोपदी, सती अंसुईया**

आदि महान आत्माओं ने भगवान विष्णु और शिव के दर्शन किये हैं तो इसी ताकत के आधार पर सैकड़ों महान पुण्यात्माओं को पूज्य नानकदेव, पूज्य पैगम्बर साहब, पूज्य जीसस क्राईष्ट पूज्य ऋषि मुनियों, देवी-देवताओं व परम गुरूओं का आर्शीवाद प्राप्त हुआ है।

जब भी आपको लेखक व प्रकाशक की ओर से व्यक्तित्व व विकास और चरित्र निर्माण संबंधी आयोजित मीटिंग सैमीनार्स में लेखक का व्यक्तिशः महान प्रेरणा दायक लैक्चर सुनने का अवसर मिले तो आप उसे हाथ से ना जाने दे। लहजे को आँखों से देखकर कानों से सुनकर और मुँह से बोलकर आप भी लाखों बुझे हुये दिलों में एक खुशहाल जीवन जीने की आशा को जगा सकते हैं। **स्मरण रहे खुशहाल लोगों से ही हमारा देश खुशहाल बन सकता है, सफलता का सिद्धान्त यह कहता कि जो चीज हमारे पास नहीं है उसे हम दूसरों को दे नहीं सकते, जिस प्रकार हमारे पास पैसा नहीं है, तो हम दूसरों को पैसा नहीं दे सकते। हमारे पास खुशी नहीं है, तो हम दूसरों को खुशी भी नहीं बाँट सकते। तो आइये इन रहस्यों को सीखकर, अपनाकर और सिखाकर हमारे देश, परिवार व समाज को खुशहाल बनायें।**

दोस्तों,
हमें बातों के बादशाहों की नहीं।
आचरण के आचार्यों की जरूरत है।
ताकि हम ढोंग का नहीं, ढंग का जीवन जी सकें।

यह पुस्तक जीने का ढंग सिखाती है, आचरण सिखाती है। यह वो चंदन है, जिसे आप अपने हाथों से दूसरों के माथे पर लगायेंगे तो, आपकी अंगुलियां तो खुद ही महक जायेगी।

आशा, आभार एवं कृतज्ञता :

इस पुस्तक को साकार करने में बहुत से व्यक्तियों का मुझे प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। जिसमें सर्वप्रथम श्री बी.पी. शर्मा (राहिनों) द्वारा दिखाये गये प्रेरणादायक रास्ते के लिए, श्री यू.आर. विश्नोई, आई.पी.एस. (से.नि. महानिरीक्षक पुलिस, राज.) द्वारा दी गई आध्यात्मिक प्रेरणा के लिए श्री फहीम अहमद व श्री महमूद खाँ द्वारा व्याकरण शुद्धि के लिए कविराज बंकट बिहारी पागल व अन्य साथियों की प्रेरक पंक्तियों के लिए सर्वश्री उमा शंकर शर्मा, सत्यानारायण शर्मा व श्रवण कुमार शर्मा के अमूल्य समय व श्रम के लिए, मेरी धर्मपत्नी श्रीमती संतोष शर्मा, बिटिया श्रुति, बेटा मोनार्क व माता-पिता सहित परिवार के सभी सदस्यों के अच्छे सुझाव व मदद के लिए, साथ ही इस पुस्तक की विश्वसनियता हेतु राज्य सरकार के सफल व्यक्तित्व के धनी सभी पदाधिकारियों व महान् विभूतियों का मैं उनके द्वारा प्रदान किये गये शुभकामना संदेशों के लिए तहे-दिल से बहुत आभारी हूँ।

इस अनूठे शिक्षाप्रद विषय पर लैक्चर हेतु आमंत्रित करने वाली

सभी शिक्षण संस्थाएँ-तेरहापंथी सी.सै. स्कूल, संजय पब्लिक सी.सै. विद्यालय, एम.पी.एस. जवाहर नगर, वैदिक बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांगानेर सी.सै. ब्वाईज स्कूल, राजकीय सी.सै. स्कूल बजाज नगर, श्री ज्ञान ज्योति सी.सै. स्कूल, केशव विद्यापीठ पी.जी. कॉलेज तथा महाराजा कॉलेज के प्राचार्यों व मैनेजमेंट कमेटी का तथा एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय रामनिवास बाग, जयपुर के ग्रुप कमाण्डर कर्नल श्री सुधीर वर्णी व अन्य अधिकारी कैडिट्स का सच्चेदिल से आभार प्रकट करता हूँ।

सोच से सफलता दिलाने वाली इस शिक्षा के सेमीनार आयोजन के समाचारों को सामाजिक हित में समय-समय पर अपने दैनिक समाचार पत्रों व सीधे समाचारों में न्यूज प्रकाशित करने के लिए प्राप्त हुए सहयोग हेतु सम्पूर्ण मैनेजमेंट व श्रीमान सम्पादक दैनिक भास्कर टी.वी. जयपुर दूरदर्शन आदि सभी का तहे-दिल से आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही यकीन करता हूँ कि भविष्य में भी इनका इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

पाठको से आशा है कि वो इस पुस्तक को पढ़कर उनके द्वारा अर्जित की गई प्रत्येक छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी उपलब्धियों के बारे में समय-समय पर हमें जरूर सूचित करते रहेंगे। इससे उनकी उपब्धियों के बीज आने वाले समय में कई गुणा बढ़ जायेगें। विद्वानों से निवेदन है कि उनकी नजर में आई किसी भी त्रुटि के लिए वो यह सोच कर क्षमा कर देगें कि यह पुस्तक चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के माध्यम से समाज को खुशहाल बनाने का एक अच्छा प्रयास है।

इस पुस्तक को आप तक पहुँचाने में मुझे बहुत से परिचित एवं

अपरिचत व्यक्तियों का योगदान मिला है, मैं उनकी मेहनत, कोशिश और सहयोग के लिए आभार प्रकट करता हूँ। उदाहरणों, कहानियों, घटनाओं, अखबारों, भाषाणों और सेमीनारों, सम्मेलनों में शामिल लोगों के साथ-साथ स्रोतों की जानकारी नहीं होने के बावजूद मैं उन सभी लोगों का तहे-दिले से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना योगदान दिया है। परमेश्वर इन सभी को सदैव सफल और खुशहाल बनायें रखें।

लेखक : राकेश शर्मा

E-mail : monarkmonarchy@yahoo.co.in

कौन कहता है कि हम हो गये है तन्हा।
हंसने-हंसाने की एक आदत तो डालिये॥
राह है सच्ची और इरादा है पक्का।
तो मंजिल मिलेगी जरूर
बस चलने की एक आदत तो डालिये।

अध्याय-1

सबसे पहले जानिये कि आपको क्या चाहिये ? और वह कहाँ से मिल सकता है ?

प्रत्येक इंसान अपना जीवन खुद के अनुसार जीता है और अपनी जीवन शैली को खुद बनाता है। यदि हम अपने जीवन में परिणामों से खुश नहीं हैं तो आइये, सीखें कि हम अपनी कार्य पद्धति को कैसे बदल सकते हैं ? नये सिरे से सोचे और जाने कि सफल लोग कैसे काम करते हैं?

प्राचीन काल में एक बार दानव राज प्रहलाद ने अपने शील (सच्चरित्रता) के बल पर इन्द्र का राज जीत लिया था। इस प्रकार प्रहलाद तीनों लोकों का राजा बन बैठे थे।

इन्द्र अपना राज्य छिन जाने से विक्षुब्ध होकर विशेषज्ञ देव गुरू बृहस्पतिजी के पास पहुँचे और प्रार्थना करने लगे कि हे देवगुरू आप कृपया बताइये कि सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है? गुरू बृहस्पति ने कहा, देव राज ज्ञान ही सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्ति का कारण है। इस रास्ते से बढ़कर क्या कोई अन्य रास्ता भी सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्ति का है? इसे जानने के लिए इन्द्र, दूसरे विशेषज्ञ असुरों के गुरू शुक्राचार्यजी के पास गये। गुरू शुक्राचार्यजी ने कहा कि तुम महात्मा राजा प्रहलाद के पास ही जाओं वो ही तुम्हें सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्ति के तरीके बतायेंगे। क्योंकि **एक खुद कामयाब राजा ही दूसरों को ठीक से बता सकता है कि कामयाबी कैसे हॉसिल की जा सकती है।**

इन्द्र सेवक का वेश बनाकर राजा प्रहलाद के पास गये और पूछा कि हे राजन ! मुझे सुख और ऐश्वर्य प्राप्ति के रहस्य बताइये। प्रहलाद ने कहा कि आप कुछ दिन हमारे साथ प्रवास करो मैं समय-समय पर आपको सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्ति के रहस्य उजागर किया करूँगा। इन्द्र वहाँ पर सेवक का रूप बनाकर ठहर गये और हर प्रकार से सर्मपण का भाव रखकर उन्होंने राजा की सेवा की।

एक बार इन्द्र ने पूछा कि दैत्यराज आपने तीनों लोकों का राज्य किस प्रकार प्राप्त किया ? प्रहलाद ने कहा– इसका कारण मेरी सच्चरित्रता है। **मैं अपने आपको महान समझकर कभी किसी का अनादर नहीं करता हूँ। एवं अपने को ज्ञानी मानकर ना ही दूसरे ज्ञानीजनों का अपमान करता हूँ।** बल्कि उनके पास जो ज्ञान है उसे सुनने, जानने व मानने की आकांक्षा रखता हूँ। ज्ञानी-जन के ज्ञान के अनुसार आचरण करने से अधिक श्रेयेस्कर कार्य क्या हो सकता है ?

सच्चरित्त्ता को मैं जीवन का एक मात्र आदर्श समझता हूँ। इसी से मुझे अपने जीवन में सफलता मिली है।

इन्द्र इस प्रकार प्रहलाद को अपना गुरू मानकर उनकी सेवा सुश्रूषा करने लगे। एक दिन राजा प्रहलाद बोले, प्रिय शिष्य मैं तुम्हारी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुम्हारी क्या मनोकामना है, मैं उसे पूरी करूँगा। तुम अपने जीवन को प्रसन्न और सफल बनाने के लिए जो भी मुझसे प्राप्त करना चाहते हो वह मैं तुम्हें आज प्रदान करना चाहता हूँ।

दैत्यराज की बातों को सुनकर इन्द्र ने अच्छा मौका है जानकर बड़े सम्मानजनक ढंग से कहा, हे महाराज ! मेरे ऊपर आपकी बड़ी कृपा है,

इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात ओर क्या हो सकती है ? क्योंकि सेवक रूप धारी इन्द्र जानते थे कि **अपने से महान व्यक्ति को दिया गया सम्मान वापिस से अपने आप को ही सम्मानित कराता है।** इन्द्र ने कहा, आप मेरे गुरू के समान हैं यदि आप अपने शिष्य के जीवन को सुखी ही बनाना चाहते हैं तो अपना शील (सच्चरित्रता) मुझे दे दीजिए, जिससे मैं सदा सच्चरित्र रहकर अपना और दूसरों का कल्याण कर सकूँ। दैत्यराज की शीलवान होना ही तो सारी सम्पत्ति थी परन्तु बचनबद्ध होने के कारण सत्य के मार्ग का उल्लंघन नहीं कर सके और उन्होंने 'तथास्तु' कह दिया।

सेवक रूप धारी इन्द्र वर लेकर चल दिये। उनके जाते ही प्रहलाद के शरीर से एक तेज निकला और वह इन्द्र के शरीर में प्रवेश कर गया। जब प्रहलाद ने इस तेज से पूछा कि देव आप कौन हैं और मेरे शरीर से निकलकर कहाँ जा रहे हैं ? उस तेज ने उत्तर दिया कि मैं शील हूँ, आपने मुझे उस सेवक को दे दिया है, इसलिए मैं आपके शरीर को छोड़कर, उसके शरीर में निवास करने जा रहा हूँ।

शील के जाने के थोडी देर बाद ही एक और तेज प्रहलाद के शरीर से निकला और इन्द्र के शरीर में प्रवेश कर गया। प्रहलाद ने पूछा कि हे तेज आप कौन हैं? उस तेज ने कहा कि मैं धर्म हूँ, जहाँ शील रहता है। मैं वहीं पर निवास करता हूँ। शील और धर्म के शरीर से निकल जाने के बाद राजा प्रहलाद को भविष्य अंधकारमय नजर आने लगा था। इतने में ही एक तीसरा तेज प्रहलाद के शरीर से निकला और कहने लगा राजन मैं सत्य हूँ, मै भी वहीं रहता हूँ, जहाँ धर्म रहता है।

इस प्रकार सत्य भी चला गया। सत्य के जाने के बाद एक तेज और राजा के शरीर से निकला वह भी कहने लगा कि राजन मैं सदाचार हूँ। जहाँ सत्य रहता मैं भी वहीं पर निवास करता हूँ।

सदाचार के जाने के बाद भयंकर आवाज करता हुआ एक तेज दैत्यराज के शरीर से और निकला वह था बल। बल ने कहा कि राजन जहाँ सदाचार रहता है, वहीं पर मैं रहता हूँ। इस प्रकार बल भी प्रहलाद के शरीर को छोड़कर इन्द्र के शरीर में प्रवेश कर गया। जब राजा प्रहलाद के शरीर से शील, धर्म, सत्य सदाचार और बल सभी निकल गये तो राजा जीवन में हताश होकर बैठ गया। फिर कुछ ही क्षणों के पश्चात् परम तेज वाली एक देवी प्रहलाद के शरीर से निकली। प्रहलाद ने पूछा हे देवी ! आप कौन हैं ?

उस देवी ने कहा, राजन ! मैं लक्ष्मी हूँ। मैं सदा बल के साथ रहती हूँ। चूँकि बल आपके शरीर को छोड़कर चला गया है इसलिए मैं भी उसके पीछे जा रही हूँ।

राजन ! जिस शील के तेज के बल पर आप तीनों लोकों के स्वामी बन गये थे, उसी शील के जाने से आपका सब कुछ चला गया है तुम्हारा सारा तेज नष्ट हो चुका है और **जिस इंसान का तेज नष्ट हो गया, उसका शीघ्र ही पतन हो जाता है।**

धर्म, सत्य, सदाचार, बल और देवी लक्ष्मी सभी शील के अधीन हैं। संसार में वहीं व्यक्ति सुख और ऐश्वर्य के साथ रह सकता है जो शीलवान है और उसका किसी तरह से भी पतन नहीं होने देता हैं।

तो सबसे पहिले जानिये कि आपको जीवन में क्या चाहिये और वह आपको कहाँ से मिल सकता है ? अपने जीवन के बारे में सोचिये और अंदर झाँककर देखिये। आज आप जहाँ भी हैं, क्या आप अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानते हैं ? सर्वश्रेष्ठ बनने का सपना ही हमें जीवन में और ऊपर उठने के लिए प्रेरित करता है। सोचिए और जानिये कि हम अपने जीवन को सर्वश्रेष्ठ कैसे बना सकते हैं ? इसके लिए हमें क्या चाहिये और वह कहाँ से मिल सकता है ? यह विचार हमें साधारण जीवन जीने वाले व्यक्तियों की भीड़ में से अलग हटाकर उच्च श्रेणी में ले आता है। साथ ही हमें सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए सच्चरित्रता के मार्ग पर चलने की राह दिखाता है।

आज हम जहाँ भी हैं, जो भी हैं, वो किसी ना किसी सोच का परिणाम है। यदि हम कारण को ढूँढ़ लेते हैं तो परिणाम को बदला जा सकता है क्योंकि परिणाम कारण में छुपा होता है।

लक्ष्य साधन में छुपा होता है किन्तु साधन के इंतजार में बैठे रहने वाला पीछे रह जाता है। यदि हमें सही लीवर मिल जाये तो हम पूरी दुनियाँ को ऊपर उठा सकते हैं। मेरा मानना है कि दुनियाँ को ऊपर उठाने की अपनी सोच मजबूत तो कीजिए लीवर अपने आप खिंचा चला आयेगा। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक साधनों को जुटाना जरूरी है, परन्तु **जिन्हें मालूम होता है कि "क्या चाहिए ?" उन्हें "कैसे प्राप्त किया जा सकता है" बताने वाले ढेरों मिल जाते हैं। सुन्दर महल बनाने का लक्ष्य रखने वाला इंसान स्वयं महल बनाना नहीं जानता है मगर वह महल बनाने वाले सैकड़ों आर्कीटेक्टों व कारीगरों को काम पर रखकर लक्ष्य को पूरा कर दिखाता है।**

फल बीज में छुपा होता है। यदि अच्छा फल खाना है तो अच्छा बीज बोना पड़ेगा। आम खाना है तो आम का बीज बोना पड़ेगा। धतूरे का बीज बोकर आम की आशा नही की जा सकती। **हिंसा, अधर्म, असत्य, धोखाधड़ी, चोरी-डकैती, मारपीट, लड़ाई-झगडा, गली-गलोच, नफरत, क्रोध, कटुता, नशीले व मादक पदार्थों के सेवन आदि बुराइयों के बीज हम अपने मस्तिष्क में बोकर सच्चरित्रता के फल प्राप्त नहीं कर सकते ।**

इंसान का मस्तिष्क एक बगीचे की तरह है। बगीचे की मिट्टी चाहे कितनी भी उपजाऊं क्यों ना हो उस पर खेती किये बगैर कुछ भी नहीं उगाया जा सकता है। यदि हम चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ बनाने के अच्छे विचारों के बीज अपने मस्तिष्क में बोयेंगे तो अच्छे फल लगेगें। अर्थात् मस्तिष्क में सकारात्मक और उत्साह से भरे विचारों के बीज लगाने से प्रसन्नता और सकारात्मक महौल पैदा होता है। इसके विपरीत यदि हम नकारात्मक विचारों के बीज अपने मस्तिष्क में डालते हैं तो नकारात्मक फल उगते हैं।

इंसानी दिमाग पर भी खेती का नियम लागू होता है–

1. जितना बोओगे, उससे ज्यादा काटोंगे।
2. जो बोओगे, वो काटोंगे।
3. जब बोओगे, तब काटोंगे।

या तो अच्छे व सकारात्मक विचार अपने मस्तिष्क को देते रहिये नहीं तो बुरे विचार स्वत: ही दिमाग में जड़ जमा लेते हैं। यानि

अपने बगीचे में आप कुछ भी नहीं बोओंगे तो भी जंगली घास-फूस तो उगेंगे ही। कहते हैं कि जंगल तो खुद ही लग जाते हैं परन्तु बगीचे लगाने पड़ते हैं।

हम अपने दिमाग में जिस भी विचार को अंदर जाने की अनुमति देते हैं, हमें उसका फल जरूर मिलता है। कम्प्यूटर का यह नियम हमारे दिमाग पर भी लागू होता है : GIGO (Garbage in Garbage out) कचारा अंदर तो कचरा बाहर। कचरा युक्त विचार कचरे की ही फसल को बढ़ाते हैं। इसके विपरीत यदि इंसान सकारात्मक विचारों के बीज अपने दिमाग में अंदर जाने की अनुमति देता है तो फसल भी अच्छी उगती है।

व्यक्ति अपने ही विचारों के कारण बनता है और अपने ही विचारों के कारण बिगड़ता है, या तो हम खुद अपने दीमाग की सकारात्मक प्रोग्रामिंग करे, नहीं तो दूसरे लोग हमारी नकारात्मक प्रोग्रामिंग कर देगें। या तो आप स्वयं ढूढिये कि आपको क्या चाहिये और वह कहाँ से मिल सकता है ? नहीं तो आपके आसपास के अपने ही लोग आपको ढूँढ़ लेगें और आप पर 'तुम कुछ नहीं कर सकते' का ठप्पा लगा देंगे। उस ठप्पे की श्याही को एक बार भी मनुष्य यदि अपने दिमाग के अंदर जाने की अनुमति दे देता है, तो यही नकारात्मक बीज का बोझ उसे जीवन भर काँटों की फसल के रूप में झेलना पड़ता है। आगे चलकर जिन्हें हम मजबूरियों का नाम दे देते हैं।

बार-बार कोई भी सच्ची या झूँठी बात का विचार सुनने, पढ़ने व

बोलने से हमारा मस्तिष्क उस विचार को अपने अंदर बिठा लेता है ओर वही विचार हमारे व्यक्तित्व का स्थाई हिस्सा बन जाता है अर्थात् वह हमारी आदत में आ जाता है। आदत बिना सोचे समझें काम कराती है। परिणामस्वरूप आदतें बुरी पड़ने पर हम बुराइयाँ फैलातें है और अच्छी पड़ने पर सच्चरित्रता फैलाते हैं। **कोई भी मनुष्य अच्छा या बुरा नहीं होता, उसके कर्म ही उसे अच्छा या बुरा कहलवाते हैं। जैसी हमारी आदतें होती हैं वैसे ही हम होते हैं। और जैसे हम होते हैं वैसी ही विचारधारा के लोग हमारे आस पास होते हैं।**

मनुष्य के पास यदि कोई सबसे बड़ी शक्ति है तो वह अच्छे व बुरे विचारों को छाँटकर चुनने की शक्ति है। यह सही है कि सभी कुछ की शुरूआत विचारों से होती है। विचार ही कारण हैं। अच्छे विचारों से अच्छा कर्म बनता है। अच्छे कर्म से अच्छी आदतें बनती हैं, अच्छी आदतों से अच्छा चरित्र बनता है और अच्छा चरित्र इंसान को शीलवान बनाता है। और **वही मनुष्य सुख और ऐश्वर्य के साथ रह सकता है जो अपनी चच्चरित्रता और व्यक्तित्व के तेज को किसी भी तरह खोने नहीं देता है।**

हमें जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले दमदार सकारात्मक विचार की जरूरत होती है कि हमें भी प्राप्त हो सकता हैं वह सब कुछ जो हमें चाहिये ? मैं भी पूरे कर सकता हूँ अपने सपने, मैं भी बन सकता हूँ सर्वश्रेष्ठ। दुनियाँ की कोई ताकत मुझे कामयाब होने से नहीं रोक सकती। मेरा भी जीवन बदल सकता है। मैं भी अच्छे नम्बरों से पास हो सकता हूँ। मैं भी जीवन में सफल व्यक्ति

बनकर बडे-बडे पदों पर पदस्थापित हो सकता हूँ। मैं भी अपने जन्म-स्थान, राज्य, देश, स्कूल, कॉलेज का नाम ऊँचा कर सकता हूँ। मैं भी एक बड़ा आदमी बन सकता हूँ। मैं भी बडे-बडे सुख प्राप्त कर सकता हूँ। मैं भी बडी-बडी उपलब्धियाँ हॉसिल कर सकता हूँ। मैं भी सारे जहाँ में अच्छे-अच्छे दोस्त बना सकता हूँ। मैं भी प्रसिद्धि पा सकता हूँ। मुझे भी सम्मान मिल सकता है। मैं भी अपने माता-पिता का एक होनहार बेटा बन सकता हूँ। मैं भी एक बहिन का अच्छा भाई बन सकता हूँ । मैं भी बन सकता हूँ एक पत्नी का अच्छा पति। मैं भी हो सकता हूँ एक गुरू का अच्छा शिष्य, एक परिवार का अच्छा मुखिया, एक समाज का अच्छा नागरिक। मैं भी बन सकता हूँ देश का प्रथम नागरिक। मैं भी बना सकता हूँ अपनी अच्छी सेहत। मैं भी हो सकता हूँ विजेता। मैं भी बन सकता हूँ एक चरित्रवान इंसान। मैं भी कमा सकता हूँ अरबों रूपयें। मैं भी बन सकता हूँ एक अमीर इंसान।

याद रखिये स्वयं पैसा जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान नहीं करता है। परन्तु पैसे से प्राप्त होने वाली चीजें व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

अमीर बनकर मैं भी बना सकता हूँ एक आलीशान घर। मैं भी ला सकता हूँ एक बहुत सुन्दर तेज दौड़ने वाली गाडी। मैं भी चुका सकता हूँ कर्जा। मैं भी करा सकता हूँ अपने माता-पिता को तीर्थ यात्रा। मैं भी कर सकता हूँ अपने बच्चों व छोटे बहिन-भाइयों की धूमधाम से शादी-विवाह। मैं भी कर सकता हूँ समाज के लिए कुछ

ऐसा काम ताकि मेरा भी मरने के बाद जिन्दा रहे नाम। मैं भी कर सकता हूँ दान-पुण्य। मैं भी करा सकता हूँ बिमारी का इलाज। मैं भी कर सकता हूँ गरीब, असहायों व अपाहिजों की मदद। मैं भी दे सकता हूँ अपनी पत्नी को सुन्दर-सुन्दर गहने। मैं भी दे सकता हूँ अपने परिवार को बेहतर लाईफ-स्टाइल। मैं भी पहन सकता हूँ अच्छे-अच्छे कपड़े। मैं भी उठा सकता हूँ पढ़ाई का खर्चा। मैं भी धुमा सकता हूँ अपने परिवार को देश-विदेश। मैं भी प्राप्त कर सकता हूँ फाइनेंशीयल फ्रिडम। मेरे पास भी हो सकती है समय की आजादी। मेरे पास भी हो सकता है एंज्वाय करने के लिए समय और पैसा दोनों।

मैं भी कर सकता हूँ अपना चरित्र निर्माण, मैं भी ला सकता हूँ अपने व्यक्तित्व में निखार। मैं भी ले सकता हूँ नौकरी की गुलामी से जल्दी रिटायर्मेन्ट। मैं भी छोड़कर जा सकता हूँ जीवन में ढेर सारी विरासत। मैं भी पा सकता हूँ पीढ़ियों की सुरक्षा।

याद रखिये सफलता प्राप्त किये बिना संतुष्ट होने वाले वाले व्यक्ति के लिए कहा जाता है कि ''संतोषी सदा सुखी और उसके घर परिवार वाले हमेशा दुखी''।

इस प्रकार की आत्मसंतुष्टि मायूसी को जो जन्म देली है और मायूस मस्तिष्क में प्रगति करने का हौसला नहीं पाया जाता। जबकि प्रगति ही जीवन है। हमें जीवन में कामयाबी हॉसिल करने के लिए सबसे पहले एक दमदार विचार की जरूरत होती है। तो आज और अभी तय करिये कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए आपको क्या

चाहिये? और जो विचार इस पुस्तक को पढ़ते समय आपके दीमाग में आ रहे हैं उन्हें तुरन्त एक कागज या अपनी डायरी में लिख लीजिये कि आपको क्या करना है ? आपको क्या चाहिये ? इस लिखे हुये विचार को रोजाना बार-बार जोर-जोर से बोलकर अपने दिमाग में बिठाते जाइये, बिठाते जाइये। बस मिल गई सफलता।

क्योंकि सफलता व्यक्ति की सोच पर निर्भर करती है, जीवन में हम वही प्राप्त करते हैं जिसके बारे में सोचते हैं। हम जो सोचते हैं वही बन जाते हैं। हमें सिर्फ एक शसक्त विचार की जरूरत होती है। विचार बीज हैं और फल बीज में छुपा होता है।

सोच को बदलोगे तो सितारे बदल जायेंगे।
नजर को बदलोगे तो नजारे बदल जायेंगे।
कश्तियाँ बदलने की जरूरत नहीं है।
दिशा को बदलोगे तो किनारे बदल जायेंगे।,

□□□

अध्याय-2

विश्वास कीजिए कि जो चाहिये वह मिल सकता है।

एक बार एक गुरू था, उसने भगवान से प्रार्थना की– हे परमात्मा! मुझे जीवन में सफलता प्राप्ति के रहस्य बता दो। जब परमात्मा ने गुरू की प्रार्थना को सुनकर उसे सफलता के रहस्य प्रदान कर दिये तो गुरू ने उन कीमती रहस्यों को संभालकर रखना चाहा। गुरू ने कहा– मैं इन सफलता के रहस्यों को पहाड़ की चोटी पर बनी गुफा में छुपाकर रख दूँगा। परमात्मा ने गुरू को समझाया कि आप ऐसा मत करना क्योंकि मनुष्य बहुत ताकतवर है वह इन रहस्यों को पहाड़ की चोटी पर बनी गुफा से निकाल सकता है। तो गुरू ने कहा कि मैं इन्हें समुद्र की गहराई में छुपाकर रख दूँगा। परमात्मा ने कहा कि मनुष्य में इतनी ताकत है कि वह इसे समुद्र के तल में से भी निकाल सकता है। **तब गुरू ने कहा कि फिर तो मैं इन सफलता के रहस्यों को जमीन में गड्ढा खोदकर बहुत गहरी सुरंग में छुपा दूँगा। परमात्मा बोले कि आप ऐसा कदापि मत करना। मनुष्य को मैनें बनाया है, यह मेरी उत्कृष्ट रचना है। और जिस भी कृति को मैं बनाता हूँ, उसमें मैं खुद निवास करता हूँ। इसी वजह से मनुष्य बहुत शक्तिशाली बना हुआ है। अतः वह इन रहस्यों को जमीन के गहरे से गहरे गड्ढे से भी बाहर निकाल सकता है।** अब तो गुरू ताज्जुब करने लगे कि जब परमात्मा ही मनुष्य को बहुत ताकतवर मानते हैं तो फिर मैं इन सफलता के रहस्यों को कहां छुपाकर रखुं ? जब गुरू कुछ निर्णय नहीं कर पाये तो उन्होंने भगवान से ही पूछ लिया कि फिर आप ही बताइये कि मैं इन रहस्यों को कहां पर छुपाकर रखूं ?

परमात्मा ने कहा कि आप इन सफलता के रहस्यों को मनुष्यों के ही दिल और दिमाग में छुपाकर रख दों ताकि सफलता प्राप्ति की इच्छा रखने वाला प्रत्येक मनुष्य, जब चाहे तब अपने दिल और दिमाग में छुपे, इन रहस्यों का इस्तेमाल करके कामयाब हो सकें।

दोस्तों ! दुनियाँ में सभी लोग समान है, सभी को परम पिता परमेश्वर ने समान बनाया है, सभी के पास एक सिर, दो हाथ, दो पैर, और वही शरीर है। इस पुस्तक को पढ़ने वाला प्रत्येक मनुष्य उसी परमेश्वर की उत्कृष्ट रचना हैं। अत: हमारे दिल और दिमाग में भी पहले से ही वो सभी सफलता के सीक्रेट्स (गुण/बीज) मौजूद हैं। हमें तो बस उन्हें प्रेरित करने की आवश्यकता है। क्या आपको मालूम है कि इंसान ही है, जो चाँद पर गया। इंसान ही है, जिसने हिमालय फतेह किया। इंसान ही है, जिसने इंगलिश चैनल पार किया। इंसान ही है, जिसने इतनें सारे चमत्कार कर दिखाये हैं। यानि इंसान ने यह सिद्ध कर दिया है कि उसमें इतनी ताकंत है कि वो जो भी चाहे, उसे हॉसिल कर सकता है। फिर आप और हम भी तो एक-इंसान ही हैं, फिर विश्वास कीजिए कि हमें जो चाहिये वह हमें भी मिल सकता है।

कामयाब होने के लिए बस एक दृढ़-विश्वास की जरूरत होती है कि हाँ, मैं कर सकता हूँ **(Yes, I Can Do It)**। जब अभी तक इतने सारे इंसान कामयाब हुये हैं तो मैं क्यों नहीं हो सकता ? सबसे पहले विश्वास कीजिए उस परमात्मा पर जिसने हम सभी को बनाया है। वहीं परमात्मा हम सभी के अंदर निवास करता है और प्यार करता है। वह हम सभी को कामयाब होते हुये देखना चाहता है। इसके बाद विश्वास कीजिए अपने आप पर कि मैं जो चाहूँ हॉसिल कर सकता हूँ। मेरा

भाग्य बहुत अच्छा है। **भाग्य के बारे में यह कहा जाता है कि जो मनुष्य घर में बैठ जाता है उसका भाग्य भी घर में बैठ जाता है। जो खड़ा रहता है, उसका भाग्य भी उसके साथ खड़ा हो जाता है। जो सोया रहता है, उसका भाग्य भी उसके साथ सोया रहता है। और जो चलता-फिरता है, उसका भाग्य भी उसके साथ चलने-फिरने लगता है।** भाग्य शब्द अपने आप में हमारे विश्वास को बढ़ाने वाला शब्द है। ढ़ीले विचार ढ़ीली आकांक्षा को जन्म देतें है। मजबूत विचार मजबूत आकांक्षाओं को जन्म देते हैं। **जैसी हमारी आकांक्षाएँ होती हैं वैसे ही हमारे कार्य पूरे होते हैं। और जैसे हमारे कार्य होते हैं, वैसा ही हमार भाग्य बनता है।** अत: हम कर्म करेंगे तो हमारा भाग्य तो साथ अवश्य देगा ही। इसी प्रकार विश्वास कीजिए अपने परिवार पर, अपने समाज पर कि आपको इनका साथ तो मिलेगा ही क्योंकि परिवार व समाज को व्यक्ति की श्रेष्ठता अच्छी लगती है और आप तो पहले से ही सर्वश्रेष्ठ बनने के विचार को अपने दिमाग में बैठकर आगे बढ़ने वालों की कतार में हैं।

जब तक रहेगी आपके विश्वास में कोई कसर।
तब तक आप नहीं कर सकेगें दूसरों पर असर।
अगर विश्वास की कसर कम,
तो दूसरों पर असर खत्म।

विश्वास हमारे मस्तिष्क को प्रेरित करता है। विश्वास से भरा हुआ मस्तिष्क, प्रेरित होकर लक्ष्य को प्राप्त करने के तरीके, साधन और उपाय खोजता है। अर्थात् दृढविश्वास के साथ मस्तिष्क को दिया गया

एक शक्तिशाली विचार कि मैं जो चाहूँ उसे पूरा कर सकता हूँ, मुझे जो चाहिये वह मुझे मिल सकता है, मैं भी सर्वश्रेष्ठ बन सकता हूँ। हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसी दृढ विश्वास के जरिये हम कोई भी काम पूरा कर सकते हैं। दृढ विश्वास के अभाव में ही हमारे अंदर निराशा और दुख: के भाव उत्पन्न होते हैं। यही वह शक्ति है जो हमें हालात का मुकाबला करने की ताकत देती है। इस प्रकार हमारा दृढ विश्वास पुन: हमारे दृढ विश्वास को बढ़ा देता है, इससे हमारे सकारात्मक विचार और आगे बढ़ जाते हैं और **इन दृढ़ विचारों को कर्म (Action) का साथ मिलते ही हमारी जिंदगी बदल सकती है।**

मनुष्य के मस्तिष्क की खूबी यह है कि यदि आप अपने मस्तिष्क को सकारात्मक निर्देश देते हैं कि अमुक काम को किया जा सकता है तो यही मस्तिष्क आपको उस काम को पूरा करने के सैकडों तरीके सुझायेगा, कि आप किन-किन तरीकों से मन चाहे काम को पूरा कर सकते हैं। **इसके विपरीत यदि आप अपने दीमाग को नकारात्मक विचार देते हैं कि अमुक काम नहीं किया जा सकता या मैं इस काम को नहीं कर सकता, तो यही दीमाग आपको उस काम के पूरा नहीं करने के हजारों बहाने सुझायेगा** कि आप किन-किन बाधाओं के कारण अमुक काम को पूरा नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में अगर आप विश्वास करते हैं कि आप सफल हो सकते हैं, तो आप सफल हो जायेंगे। और यदि आप शंका करते हैं कि आप सफलता प्राप्त नहीं कर सकते तो आप नहीं कर पायेंगे। क्योंकि **हमारे सोचने के तरीके से ही परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं और परिस्थितियाँ रिजल्ट्स प्रदान कराती हैं। सफलता का सीक्रेट यह है कि यदि हम जीत के बारे में**

सोचेंगे तो जीत जायेंगे, और इसके विपरीत यदि हम हार के बारे में सोचेंगे तो हार जायेंगे।

प्रबल दृढ़ इच्छा शक्ति के इस रहस्य को जानने के कई उदाहरण हमारे शास्त्रों से भी हमें सीखने को मिलते हैं :

एक समय की बात है कि एक राजकुमार के पिता राजा बृहद्रथ ने अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान किया। अश्वमेघ यज्ञ का अश्व जो यज्ञ के लिए निश्चित हो चुका था, जब समुची पृथ्वी की परिक्रमा करके लौट रहा था तो रात्रि में देवराज इंद्र ने उस घोड़े को चुराकर अन्यत्र छिपा दिया। राजा बृहद्रथ अपना अनुष्ठान पूरा नहीं करने से शुब्द्ध होकर मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। राजकुमार ने अपने पिता का शरीर तपाये हुये तेल में सुखाकर सुरक्षित रख दिया और अपने पिता के अश्वमेघ यज्ञ के महान अनुष्ठान को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लिया। राजकुमार को पूरा विश्वास था कि मैं जो चाहता हूँ, वह मुझे मिल सकता है। अपने सोचे हुये इस लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से राजकुमार दक्षिण दिशा में गया। वहाँ वह कोल्हापुर नगर के मणिकण्ठ तीर्थ स्थान पर पहुँचा। जहाँ राजकुमार ने देवेश्वरी महालक्ष्मी के दर्शन किये। राजकुमार ने महामाया महालक्ष्मी जी को प्रणाम करके अपने उद्देश्य की पूर्ती के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना की– "जिसके हृदय में असीम दया भरी हुई है, जो समस्त कामनाओं को देती है तथा अपने देखने मात्र से सारे ज़गत की सृष्टि, पालन और संहार करती है, उस जगन्माता महालक्ष्मी की जय हो। जिस शक्ति के सहारे उसी के आदेश के अनुसार परमेष्ठी ब्रह्मा सृष्टि की रचना करते हैं, भगवान विष्णु जगत का पालन करते हैं तथा भगवान रूद्र विश्व का संहार करते है, उसी सृष्टि, पालन और संहार करने वाली माँ भगवती का मैं भजन करता हूँ।

हे माँ कमले ! योगी जन आपके चरण कमलों का चिंतन करते हैं। कमलालयें ! आप अपनी शक्ति से हमारी समस्त मन की बातों को जानती हों। तुम्हीं मन की कल्पनाओं को एवं उन्हें प्राप्त करने वाले संकल्प को उत्पन्न करती हों। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति– ये सभी आपका ही रूप हैं। आप परम ज्ञान स्वरूपणी हो। तुम्हारा स्वरूप निष्कल, निर्मल, नित्य, निराकार, निरंजन अंतरहित, आतंकशून्य, आलम्बहीन तथा निरामय है। देवी ! तुम्हारी महिमा का वर्णन करने में कौन समर्थ हो सकता है। जो षट्चक्रों का भेदन करके भगवान के अंत:करण के बारह स्थानों में विहार करती है, अनाहत, ध्वनी, बिन्दु, नाद और कला– ये जिसके स्वरूप हैं, उस अद्‌भुत माता महालक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूँ। माता ! आप अपने मुखरूपी पूर्णचन्द्रमा से प्रकट होने वाली अमृतराशि को बहाया करती हो। तुम्हीं पय, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी नामक वाणी हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ, देवी ! तुम जगत की रक्षा के लिए अनेक रूप धारण किया करती हो। मॉ अम्बिके ! तुम्हीं ब्राह्मी, वैष्णवी तथा माहेश्वरी शक्ति हो। वारही, महालक्ष्मी, नारसिंही, ऐन्द्री, कौमारी, चण्डिका, जगत को पवित्र करने वाली लक्ष्मी, जगन्माता, सावित्री, चन्द्रकला तथा रोहिणी भी आप ही हो। परमेश्वरी, तुम भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिए कल्पलता के समान हो। कृपा करके मुझ पर प्रसन्न हो जाओं।"

इस प्रकार स्तुति करने पर माता महालक्ष्मी राजकुमार पर प्रसन्न हो गई और बोली– राजकुमार ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम जो चाहो वो आज मुझसे प्राप्त कर सकते हो।

राजकुमार ने अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए यज्ञ के घोड़े को वापिस पाने की इच्छा बताई तथा अपने पिता को पुन: जीवित करने का

उपाय जानने के लिए महालक्ष्मी जी से प्रार्थना की। माता ने इस कार्य को पूरा करने के लिए सिद्ध समाधिक नामक विख्यात् विशेषज्ञ के पास पहुँचने को राजकुमार को प्रेरित किया। सिद्धसमाधि ने राजकुमार के लक्ष्य को पहचानकर देवताओं का आवहान् किया, देवताओं ने प्रसन्न होकर इन्द्र के द्वारा चुराये हुये यज्ञ के घोड़े को वापिस लाकर दे दिया। साथ ही साधुश्रेष्ठ सिद्धसमाधि ने जल अभिमंत्रित कर राजा बृहद्रथ के शव के मस्तिष्क पर छिड़क कर उन्हें भी जीवित कर दिया। इस प्रकार अवश्वमेघ यज्ञ का लक्ष्य पूरा हुआ और राजकुमार के दृढ़ विश्वास की जीत हुई।

हमें इस बात की सच्चाई को स्वीकारना ही होगा कि यदि हम सोचते हैं कि हम जीत जायेंगे तो हम जीत जायेंगे, हम सफल हो जायेंगे तो हम निश्चित ही सफल हो जायेंगे। इसी प्रकार यदि हम सोचते हैं कि हम सर्वश्रेष्ठ हैं तो हम सर्वश्रेष्ठ बन जायेंगे, हम सोचते हैं कि हम काम को कर सकते हैं तो एक दिन हम उस काम को जरूर पूरा करके दिखायेंगे। इसके विपरीत शंका करने से हमारा उत्सा ठण्डा पड़ जाता है। हमारा नकारात्मक नजरिया ही हमें नाकामयाबी दिला देता है क्योंकि हमारे सोचने का तरीका ही कार्य के होने या ना होने का कारण बनता है, हमारे विचार ही कारण हैं, और परिणाम हमेशा कारण में छुपा होता है। सफल लोग अलग से नहीं होते हैं, आप और हम में से ही होते हैं। फर्क सिर्फ दृढ़ निश्चय का होता है। हमारा दृढ़विश्वास ही हमारे लक्ष्य को दृढ़निश्चय में बदलता है।

आज के बाद अपने आप से वादा कर लो कि कामयाबी यदि चाहिये तो हमें यह बोलना छोड़ना पड़ेगा कि 'मैं कुछ नहीं कर

सकता' (I Can't Do It) बल्कि इसके स्थान पर हमें अपने अंदर यह आदत विकसित करनी पड़ेगी कि मैं कर सकता हूँ(I Can Do It) I याद रखिये किसी काम को पूरा नहीं करने के हजार बहाने हो सकते हैं, मगर उसी काम को पूरा करने के लिए एक कारण का होना ही काफी होता है।
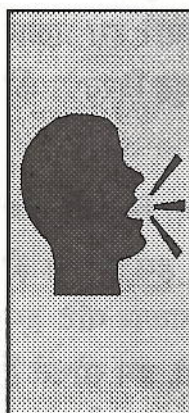
आपने चाहा ही नहीं हालात बदल सकते थे।
मेरी आँखों के आँसु आपकी आँखों से निकल सकते थे।
मगर आप तो अटके रहे सॉहिल पर एक बूँद की तरहाँ।
लगाते छलाँग समुद्र में तो आप भी दूर निकल सकते थे।

□□□

अध्याय-3

अपने विश्वास को कैसे प्रबल बनाये ?

कितने लोग है जो भगवान पर विश्वास रखते हैं ? मगर कितने लोग हैं जिन्होंने भगवान को देखा है ? भगवान को आँखों से नहीं देखने पर भी हम भगवान में पूरा विश्वास रखते हैं। हम रोजाना सुबह: से रात्रि तक इसी विश्वास के साथ हजारों काम करते हैं। घर से बाहर निकलते हैं तो हमें विश्वास होता है कि हम वापिस अपने घर आयेंगे और रात को बिस्तर पर सोयेंगे। ट्रेन या एरोप्लेन में बैठते हैं तो विश्वास होता है कि गाड़ी चलेगी और हम अपनी यात्रा सुरक्षित पूरी करेंगे। हजार, दस हजार की टिकिट लेकर बैठ जाते हैं। क्या हमने कभी किसी गाड़ी के ड्राईवर से उसका लाइसेंस पूछा हैं ? क्या कभी जानकारी लेते हैं कि गाड़ी में ब्रेक भी लग रहे हैं या नहीं ? हमें ब्रेक फेल होने का डर क्यों नहीं होता ? क्योंकि हमें विश्वास होता है। जरा सोचिय मात्र और मात्र विश्वास के आधार पर ही हम अपनी जिंदगी को एक अजनबी ड्राईवर के हवाले कर देते हैं। सर्कस तो सभी ने देखा होगा। सर्कस में साक्षात विश्वास का अनूठा उदाहरण उस समय देखने को मिलता है, जब ऊँचे झूले पर खेल दिखलाती हुई एक लड़की दूसरी ओर झूले पर झूलते हुये लड़के का पूरा विश्वास करके, अपने दोनों हाथ इस आशा में छोड़ देती है कि उसका साथी ठीक समय पर उसके पास आकर उसके दोनों हाथ पकड़ लेगा और उसे नीचे गिरने से बचा लेगा। इसी विश्वास के भरोसे मास्टर बीसों जंगली शेरों के बीच जाकर उनसे खेल-करतब कराता है।

यदि आप विश्वास करते हैं कि आप पहाड़ हिला सकते हैं तो आप पहाड़ हिला सकेंगे और यदि आप विश्वास करते हैं कि आप मरी चुहिया को भी नहीं उठा सकते, तो यकीनन आप मरी चुहिया को भी नहीं उठा पायेंगे। इन दोनों कामों के पीछे हमारी विश्वास की शक्ति ही कारण होती है।

प्रबल विश्वास ही वह शक्ति है जो महान वैज्ञानिकों, राजनेताओं, इतिहासकारों, सैनिकों, लेखकों, व्यवसाइयों, कलाकारों की महानता के पीछे छुपी होती है। किसी संगठन की सफलता का राज भी आपसी विश्वास पर ही टिका होता है। घर में पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहिन आदि रिश्तों की मजबूत दीवार भी विश्वास पर ही टिकी होती है। सफल होने के लिए दृढ़विश्वास ही वह मूलभूत तत्व है जो मस्तिष्क को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। विश्वास से भरा मस्तिष्क कार्यों को पूरा करने के तरीके, साधन व उपाय सुझवाता है। **आप अपने पर एक दम पक्का विश्वास कीजिए, इससे दूसरे भी आप पर विश्वास करेंगे। अपने मस्तिष्क में हम विश्वास बढ़ाने की घटनाओं, उदाहरणों को बार-बार बोलकर दोहराकर अपने विश्वास की शक्ति को बढ़ा सकते हैं।**

भरोसा अब भी मौजूद है, दुनियाँ में दरियाँ की तरहाँ।
पेडों के भरोसे पक्षी सब कुछ छोड़ जाते हैं।
बसंत के भरोसे वृक्ष बिल्कुल खाली हो जाते हैं।
पतवारों के भरोसे नावें समुंद्र लांग जाती हैं।
समुद्र के भरोसे जहाज़ पानी में तैर जाते हैं।

बरसात के भरोसे बीज धरती में समा जाते हैं।

पुरूष के भरोसे नारी सब कुछ छोड़ आती है।

भरोसा अब भी मौजूद है दुनियाँ में दरियाँ की तरहाँ।

रूपवती अप्सरा घृताची की पुत्री और महर्षि भारद्वाज की सुन्दर कन्या श्रुतावती की दृढ़ इच्छा शक्ति और दृढ़ संकल्प की कथा हमें विश्वास के बल पर असंभव को भी संभव कर दिखाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

श्रुतावती ने अपने सुन्दर होने की महानता को जानकर देवराज इन्द्र की पत्नी बनने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। इन्द्र को पति रूप में पाने के लिए उसने कठोर तप किया।

इन्द्र, श्रुतावती की कठोर भक्ती को देखकर प्रसन्न हो गये और महर्षि वशिष्ठ का रूप बनाकर उसकी परीक्षा लेने के लिए अपने साथ विवाह करने का प्रस्ताव लेकर पहुँचे। श्रुतावती महर्षि का रूप बनाकर आये इन्द्र देव को पहचान ना सकी। श्रुतावती ने महर्षि को पूरा आदर देते हुये कहा-महामुने ! मैं अपने मन में देवराज इन्द्र को अपना पति बनाने का संकल्प कर चुकी हूँ इसलिए मैं आपसे मेरे साथ विवाह करने की इच्छा को पूरा नहीं कर सकती। महर्षि ने श्रुतावती के दृढ़ संकल्प और कठिन साधना को ध्यान में रखकर, आर्शीवाद प्रदान करते हुये कहा– **अच्छे विचार और अच्छे कर्म का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता।** इसलिए तुम्हारी तपश्या की मनोकामना शीघ्र पूरी होगी। श्रुतावती को महर्षि ने पाँच कच्चे फल भी दिये और बताया कि इन फलों को आग पर रखकर पका लेने से तुम्हारी कामना का फल प्राप्त होगा। महर्षि के जाने के बाद श्रुतावती ने कच्चे फलों को पकाने के

लिए आग पर चढ़ा दिया। किन्तु **फल बहुत देर तक आग पर चढ़े रहने के बाद भी जब नहीं पके तो श्रुतावती ने अपने दृढ़ संकल्प की पूर्ती के प्रयासों को और तेज कर दिया। दूर-दूर से ईंधन लाकर फलों को पकाने के लिए जलाने लगी।** मगर फल अभी भी वैसे के वैसे ही कच्चे रखे हुये थे। श्रुतावती को भय जरूर लगा परन्तु उसने **अपने लक्ष्य को पाने का साहस नहीं छोड़ा, व्याप्त हुये भय को दूर भगाते हुये वह सोचने लगी, यदि कच्चे फल नहीं पके तो उसकी साधना कैसे पूर्ण होगी ?**

जब सारा ईंधन समाप्त हो गया तो श्रुतावती ने अपने पूरे दृढ़ विश्वास को एकत्रित कर जोर भरे स्वर में कहा, हे देव ! यदि आप इस तरह से मेरे साहस की परीक्षा लेना चाहते हैं, तो जरूर लीजिए। मैं इससे कभी पीछे नहीं हटूंगी। यह कहकर श्रुतावती ने अपने कच्चे फलों को पकाने के लिए ईंधन के रूप में पहले अपना एक पैर फिर दूसरा पैर और अंत में सारा शरीर आग में झोंक दिया। इस प्रकार इन्द्र कडी से कडी परीक्षा लेने के बाद भी श्रुतावती को उसके दृढ़ संकल्प से गिरा नहीं सके। आखिरकार उसकी जीत हुई। श्रुतावती के दृढ़ संकल्प और साहस से प्रसन्न होकर देवराज इन्द्र ने वरदान दिया कि तुम अपने भौतिक शरीर को त्यागकर, स्वर्ग पहुँचने पर, मुझे पति रूप में अवश्य प्राप्त करोगी। थोड़े समय पश्चात् ही श्रुतावती ने अपने भौतिक शरीर को त्याग दिया और वह स्वर्ग में जाकर 'इन्द्राणी' के रूप में इन्द्रदेव के साथ रहने लगी। धन सम्पदा और वैभव प्रदान कराने वाले देवराज इन्द्र ने चलते समय श्रुतावती को साथ ही यह वरदान भी दिया– तुम्हारे इस तप और त्याग की महान कथा को पढ़ने वाले स्त्री-पुरूष मनोवांछित फल को प्राप्त कर सकेगें।

इस प्रकार आप यकीन करते हैं कि आप महान बन सकते हैं तो आप सचमुच महान बन जायेंगे। आप विश्वास करते हैं कि आप जीत जायेंगे तो आप जरूर जीत जायेंगे। आप विश्वास रखते हैं कि आपको जो चाहिये वह मिल सकता है तो, निश्चित ही आपका चाहा, आपको मिल जायेगा।

इसके विपरीत यदि आप जरा भी शंका करते हैं तो जिस प्रकार थोडी सी खटाई, पूरी कढ़ाई भरे हुये दूध को फाड़ देती है। उसी प्रकार जरा सी भी शंका हमारे पूरे विश्वास को हिला कर रख देती है। यही कारण है कि आधे-अधूरे मन से किये गये कार्य आधे रिजल्ट्स नहीं दिलाते, बल्कि आधे अधूरे मन से किये गये कार्य 'जीरो' रिजल्ट्स दिलाते हैं। ''रोता सा जाये मरे की खबर लाये'' कहावत का भी यही अर्थ निकलता है। **आधे मन से किये गये कार्य महत्त्वपूर्ण के स्थान पर महत्वहीन बन जाते हैं।** यह कहा भी गया है कि जिस प्रकार थोड़ी सी आग ज्यादा गर्मी नहीं दे सकती उसी तरहां कमजोर इच्छा शक्ति से बड़ी कामयाबियाँ हॉसिल नहीं की जा सकती। महान चिंतक सुकरात के शब्दों में सफलता की इच्छा अगर उतनी ही गहरी हो जितनी की डूबने वाले को हवा की होती है तो वह आपको जरूर मिलेगी। **याद रखिये बाधा जिनती बडी होती है, अवसर उतना ही बडा होता है, और सफलता की इच्छा रखने वाले अवसर को देखते हैं, बाधा पर फोकस नहीं करते हैं। अपने आप पर गर्व करिये कि आप काम को पूरा कर सकते हैं। आपके विश्वास का प्रभाव ही आपके काम की गुणवत्ता (Quality) पर पड़ता है। काम की**

क्वालिटी और काम करने वाले की क्वालिटी को अलग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक काम में बाधा पग-पग पर होती है। मगर जो दूरअंदेशी (Vision) को ध्यान में रखते हुये, अपना सब कुछ एक ही झटके में दाव पर लगा देते हैं और किसी तरहां भी अवसर को जाने नहीं देते, वो ही अथाहा तादात में शोहरत, दौलत, शक्ति, प्रेम और सफलता प्राप्त करते हैं। याद रखिये बीज भी एक बार खाक में मिलकर ही लहलहाती फसल पैदा करता है। स्वर्ग तो सभी जाना चाहते हैं परन्तु स्वर्ग जाने के लिए मिटना पड़ता है।

एक किसी भी पेड़ का बीज अपने हाथ में लीजिए और जरा अब सोचिये– क्या आप मानते हैं कि इस बीज में वो सभी गुण मौजूद हैं, जो एक पेड में होते हैं ? जवाब आयेगा हाँ (Yes) इस बीज में उस पेड के सभी गुण मौजूद हैं, जिस पेड़ का भी यह बीज है। फिर सोचिए कि, क्या आप मानते हैं कि यह बीज भी उतना ही बड़ा पेड बन सकता है? जवाब आयेगा Yes (हाँ) यह बीज भी उतना ही बड़ा पेड़ (वट वृक्ष) बन सकता है। बस, इसे सही हवा पानी मिलने की जरूरत है।

फिर अपने आप से पूछिये कि हर इंसान के अंदर पहले से भगवान के दिये हुये, वो सभी तत्व मौजूद हैं, जो एक सफल व महान बनने के लिए आवश्यक होते हैं। तो जब एक छोटा सा बीज इतना बड़ा पेड़ बन सकता है, तो हम एक सफल इंसान क्यों नहीं बन सकतें? जवाब आयेगा – Yes (हाँ) हम भी बन सकते हैं एक सफ़ल इंसान। हमें भी मिल सकता है वह सब जो हमें चाहिये ? **हमें सिर्फ सही हवा पानी के रूप में एक पक्के**

विश्वास युक्त विचार की जरूरत होती है। अपने विश्वास को जगाइये और आगे बढ़िये और जोर से बोलिये कि मैं जो निर्णय लेता हूँ दृढ़ता से लेता हूँ। मैं एक बार निर्णय लेने के बाद पीछे नहीं हटता हूँ।

मैं जीतता इसलिए हूँ,
क्योंकि मैं हार नही मानता।
हिम्मत बुलंद है अपनी पत्थर की जान रखते हैं।
कदमों तले जमीं तो क्या हम आसमां रखते हैं।
मैं जीतता इसलिए हूँ,
क्योंकि मैं हार नहीं मानता।

यह सही है कि जीवन के युद्ध में हमेशा व नहीं जीतता, जो सबसे ताकतवर या तेज होता है बल्कि जल्दी या देर से जीतता वही है जो सोचता है कि वह जीत सकता है। हर दिमाग में कोई ना कोई उपलब्धि का बीज सोया रहता है। सही हवा पानी मिलने से यही बीज प्रेरित होकर इंसान को सफलता की बुलंदियों पर पहुँचा सकता है। **किसी भी कार्य में जुटे रहिये जब तक कि वह पूरा ना हो जाये, यह सफलता का सीक्रेट है।**

कोई फर्क नहीं पड़ता कि आज आप कहाँ हो।
सब कुछ इसी पर निर्भर करता है कि आपको जाना कहाँ है ?
कोई फर्क नहीं पड़ता की आज आपकी दशा क्या है ?
सब कुछ इसी पर निर्भर करता है कि आपकी दिशा क्या है ?

आज के बाद अपने विश्वास के लेवल को ऊँचे से ऊँचा बढ़ा लो और **जब भी विश्वास डगमगाये तो सोचो कि जब एक छोटा सा बीज इतना बड़ा पेड़ बन सकता है, तो मैं एक सफल इंसान क्यों नहीं बन सकता ?** सफल इंसान कोई अलग से नहीं होते, हम और आप में से ही होते हैं। दृढ़ निश्चय कर लो की मैं बैस्ट ऑफ दी बैस्ट हूँ। दुनियाँ की कोई ताकत मुझे कामयाब होने से नहीं रोक सकती। मैं एक दरियाँ (बड़ी नदी) हूँ और दरियांओं को कोई रास्ता देता नहीं है, बल्कि दरियाँ अपना रास्ता खुद बनाते हैं। और जिस रास्ते से भी दरियां गुजर जाते हैं लोग उसका अनुसरण करते है। विश्वास कीजिए आप विजेता थे, विजेता हैं, और विजेता रहेंगे।

सिर झुकाओंगे तो पत्थर भी देवता हो जायेगा।
रहमत रही खुदा की तो हर वादा वफा हो जायेगा।
और आप तो दरियां हैं आपको अपना हुनर मालूम है।
जिधर भी चल पड़ेंगे उधर ही रास्ता हो जायेगा।

□□□

अध्याय-4

सफल व असफल व्यक्तियों के सोचने का ढंग

दुनियाँ में एक विशलेषण के आधार पर 80% तथा 20% का रूल्स लागू होता है। 80% लोगों की एक तरफ भीड़ है तो मात्र 20% लोग चुनिंदा श्रेणी में आते हैं, यानि की 80% लोग असफल हैं तो मात्र 20% लोग सफल पाये जाते हैं। इस सफलता और असफलता में बहुत सारे कारण, सोच, कर्म, आदतें, चारित्रिक और व्यक्तित्व विकास के सकारात्मक एवं नकारात्मक गुण-दोष सम्मलित होतें हैं मगर 20% सफल लोगों में एक विशेष अंतर इनके दिमाग में सकारात्मक सोच (Positive Attitude) का होना पाया गया है। यानि **सफल लोगों के अंदर किसी भी कार्य या बिन्दु को लेकर सोचने का तरीका असफल लोगों से अलग होता है। इसी वजह से सकारात्मक सोच रखने वाले लोग भीड़ में से ऊपर उठकर चुन्निदा लोगों की श्रेणी में आ जाते हैं।**

दूसरे शब्दों में सफल लोगों में, अपने दिमाग की सकारात्मक प्रोग्रामिंग करने का गुण सीख लेना पाया गया। यूँ तो हर इंसान को अपने सोचने पर स्वतंत्रता प्राप्त हैं। वह चाहे तो किसी भी कार्य के नकारात्मक बिन्दु सोच सकता है और चाहे तो उसके सकारात्मक रूप सोच सकता है। इंसान का दिमाग विचारों की एक फैक्ट्री है जिसमें हर पल अनगिनत विचार बनते बिगड़ते रहते हैं। सफल होने के लिए किसी भी कार्य की अच्छाइयाँ, अवसर देखने व सोचने (सकारात्मक) की आदत का होना आवश्यक है। यह सच्चाई उन्हीं लोगों के लिए है,

जो साधारण जिन्दगी की भीड़ से हटकर चुन्निदा लोगों की श्रेणी में आना चाहते हैं, अगर इंसान सफल होना चाहता है तो उसे पॉजेटिव सोचने की आदत तो डवलप करनी ही पडेगी। क्योंकि **सकारात्मक सोचने की आदत से ही कार्य व प्रगति के अवसर दिखाई देते हैं एवं नकारात्मक सोचने से मनुष्य को बीच की बाधाएँ दिखाई देती हैं। बाधाएँ देखने वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को छोड़ देता है।**

इस सम्बन्ध में महान चिंतक पी. साइरस के शब्द बहुत मूल्यवान है– ''बुद्धिमान मनुष्य अपने दिमाग का मालिक होता है और मूर्ख उसका गुलाम''। यानि बुद्धिमान मनुष्य ने सीख लिया है कि वह अपने दिमाग को किस प्रकार काम में ले और साधारण मनुष्य उस प्रकार काम करता है जिस प्रकार उसका दिमाग उसे निर्देशित करता है।

इंसानी दिमाग की खूबी यह है कि इसमें एक बार जो विचार, अहसास अंदर चला जाता है उसे बड़े से बड़ा डॉक्टर, वैज्ञानिक या इंजिनियर भी बाहर नहीं निकाल सकता। दूसरी और इंसानी मस्तिष्क वही सोच बाहर फैलाता है जो उसके अंदर भरी होती है। अर्थात् यदि हमने अपने दिमाग की प्रोग्रामिंग नकारात्मक विचारों से कर दी है तो यह मस्तिष्क जीवन भर हमारे सामने बाधाएँ ही पैदा करता रहेगा। इसके विपरीत यदि हम अपने मस्तिष्क की प्रोग्रामिंग सकारात्मक विचारों से करते हैं तो हमारा मस्तिष्क हर पल हमें एक के बाद एक आगे बढ़ने के अवसर दिखाता है। जिन्हें एक्शन का साथ मिलते ही हम कामयाब हो जाते हैं। **सकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति का ध्यान अपने लक्ष्य पर बना रहता है जबकि नकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति का ध्यान डर पर बना रहता है।**

लक्ष्य ना औझल होने पावें।
कदम मिलाकर चल।
सफलता आपके कदम चूमेगी।
आज नहीं तो कल।

किसी भी कार्य में जुटे रहिये जब तक कि वह पूरा नहीं हो जाता। यह सफलता का सीक्रेट है। लोग बहाने बनाते हैं कि मेरे पास सफल इंसानों जैसा दिमाग हो तो मैं भी सफल इंसान बन सकता हूँ। सच यह है कि सफल इंसान बनने की सोच का बीज पहिले अपने दिमाग में डालिए आपका दिमाग भी खुद पे खुद सफल इंसानों के दिमाग की तरह बनता चला जायेगा।

सकारात्मक विचार हमारी चेतना को बढ़ाते हैं, चेतना हमारी भावनाओं का विकास करती है, हमारी भावनाएँ हमारे चारों ओर एक ज्ञान का घेरा बना देती हैं जिसे 'ऑरा' कहते हैं। यह 'ऑरा', जैसी हमारी भावनाएँ होती है, वैसे ही स्वरूप को हकीकत में बदल कर हमारे सामने हाजिर कर देता है। इस प्रकार हमारा अवचेतन मस्तिष्क किसी भी सशक्त विचार को बहुत तेजी से हकीकत में बदल देता है।

नकारात्मक विचारों को प्रबल करने वाला व्यक्ति बहाने बनाने में महारथ हॉसिल कर लेता है और जरा सी भी बाधा आते ही बहाने बनाने लगता है। वह सारे ऐसे काम जानता है जिन्हें नहीं किया जा सकता, सारे ऐसे कारण जानता है, जिनकी वजह से काम को पूरा नहीं किया जा सकता। साथ ही सारे ऐसे लोगों को भी जानता है जो काम को पूरा नहीं

कर सके थे। बहाना बनाने की आदत मन में डर के भावों को बढ़ा देती हैं और उसका विश्वास डगमगा जाता है, परिणामस्वरूप वह सफलता की ओर कदम ही नहीं बढ़ता, और बढ़ता भी है तो वह अपने विचारों के कारण फेल हो जाता है क्योंकि **मनुष्य वैसा ही बन जाता है जिस तरह के विचारों को वह अपने मस्तिष्क में भरता है, जिस तरह के विचारों पर विश्वास करता है तथा जिस तरह के विचारों में भावनात्मक आस्था रखता हैं।** आपने जरूर सुना होगा कि जब लोग पहली बार अपराध के सम्पर्क में आते हैं तो वे इससे नफरत करते हैं, वो थोड़े समय पर अपराध के सम्पर्क में रहने से इसके आदि हो जाते हैं, और अगर वो लम्बे समय तक अपराध के सम्पर्क में रहते हैं तो वे खुद अपराधी बन जाते हैं। ऐसा उनके साथ, लगातार उनके अवचेतन मस्तिष्क में घुसन वाले नकारात्मक विचारों के कारण ही होता है।

इंसान का दिमाग जूस की मशीन की तरह से कार्य करता है। जैसे जूस की मशीन में यदि आम डालेंगे तो वह आम का जूस ही बाहर निकालती है, और करेला, नीम या कैकटस डालेंगे तो मशीन उसका जूस बाहर निकाल देगी। **सफल लोग अपने दिमाग की सकारात्मक प्रोग्राममिंग करते रहते हैं, जिससे वो अपने दिमाग के मालिक बन जाते हैं।** भौतिक विज्ञान के नियमों की तरह हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। जमीन पर गैंद डालने से वह वापिस ऊपर भी उछलेगी ही। इसी प्रकार हमारे मस्तिष्क में अंदर गया विचार अपने जैसे अन्य समान विचारों को अपनी ओर आकर्षित कर कई गुणा कर बढ़ा लेता है और इन्हें वापिस बाहर फैंकता रहता है। **ज्यादातर लोग नतीजों (परिणामों) को बदलने में लगे रहते हैं परन्तु नतीजें के कारणों को नहीं बदलते हैं। आज हम जीवन में जहाँ भी हैं, जो भी हैं वह हमारे**

द्वारा पूर्व में अपने मस्तिष्क में भरे गये विचारों की क्रिया की प्रतिक्रिया है।

हम सभी अपने काम व व्यवहार के लिए खुद जिम्मेदार हैं। हमने जो भी विचार अपने मस्तिष्क में भरे उन्हीं के परिणाम हमें अभी तक जीवन में मिले हैं। हम अपनी वजह से ही कामयाब या नाकामयाब बनते हैं। किसी ने रोक नहीं रखा है। या तो सकारात्मक विचार अपने दिमाग में भरते रहिये नहीं तो गलत नकारात्मक विचार अपने आप खाली दिमाग में भर जायेंगे।

ध्यान रहे :

सफलता व्यक्ति की सोच निर्भर करती है। हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं। यदि हम सकारात्मक सोचेंगे तो सकारात्मक रिजल्ट्स मिलेंगे। इसके विपरीत यदि नकारात्मक सोचेंगे तो नकारात्मक रिजल्ट्स मिलेंगे। विजेता और पराजीत दोनों के सोचने का ढंग अलग-अलग होता है, और यही ढंग उनकी हार व जीत का कारण बनता है।

हमारे सोचने का तरीका ही कार्य के पूरा होने या ना होने का कारण बनता है। क्योंकि हमारे सोचने के तरीके से ही परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है। और परिस्थितियाँ रिजल्ट्स प्रदान कराती हैं। सबसे मुख्य बात यह है कि भगवान ने हमें हमारी सोच को ठीक रखने के लिए **कंट्रोल पावर** दी है। जिसके माध्यम से हम अपने नकारत्मक विचारों पर कंट्रोल कर उन्हें अपने दिमाग में अंदर जाने से रोक सकते हैं और इसी कंट्रोल पावर की

वजह से हम नकारात्मक विचारों के स्थान पर सकारात्मक विचार हमारे मस्तिष्क में भर सकते हैं।

असफलता की सोच रखने वाले व्यक्ति को चाँद में भी दाग नज़र आता है तो सफलता प्राप्त करने की सोच रखने वाले व्यक्ति को कीचड़ में भी कमल दिखाई देते है। ऐसे असफल व्यक्ति हमेशा कमियाँ देखते हैं। सोचते हैं कि मेरी तो किस्मत ही खराब है। सफल व्यक्ति कमियों में भी अच्छाइयाँ ढूंढते हैं और सोचते हैं कि मैं बड़ा लक्की हूँ। असफल व्यक्ति बहाने बनाता है– मेरी तबियत खराब रहती है, मुझसे सब नाराज रहते हैं, मैं तो पढ़ा-लिखा ही नहीं हूँ। मैं कुछ नहीं कर सकता। सफल व्यक्ति– हमेशा अवसर की तलाश में रहता है कहता है अब मैंने दवाई ले ली है। अब मैं अच्छा हो रहा हूँ, मुझसे सब प्यार करते हैं, I am the best, मैं नम्बर वन हूँ, मैं तो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, मगर मैं हजारों पढ़े-लिखे लोगों को नौकरी पर रख सकता हूँ, I am a winner, I Can do it, मैं जो चाहूँ उसे पूरा कर सकता हूँ।

सकारात्मक सोचने से इंसान का विश्वास का लेवल बढ़ जाता है, विश्वास का लेवल बढ़ने से उसकी कार्य की परफोरमेंस बढ़ जाती है और इंसान सफल हो जाता है।

विश्वास का लेवल

इसके विपरीत नकारात्मक सोचने से इंसान का विश्वास का लेवल कम हो जाता है जिससे उसकी परफोरमेंस कम होकर नीचे गिर जाती है और वह अपनी गिनती असफल या फेल होने वालों में करा लेता है।

इस प्रकार सफलता व असफलता का कारण इंसान के खुद के सोचने के ढंग का अंतर बनता है। इसलिए अरब वासियों में एक कहावत भी प्रसिद्ध है–''बुद्धिमान व्यक्ति का एक दिन, मूर्ख व्यक्ति के जीवन के बराबर होता है''। तो इस रहस्य ,को पढ़कर और समझकर दृढ़निश्चय करें कि **हम भी अपनी सोच को ठीक रखकर अपने दिमाग के मालिक बन सकते हैं।**
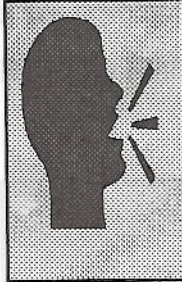
कौन कहता है कि हम हो गये है तन्हा।
हंसने-हंसाने की एक आदत तो डालिये॥
राह है सच्ची और इरादा है पक्का,
तो मंजिल मिलेगी जरूर
बस चलने की एक आदत तो डालिये।

इस सृष्टि में (Pull) आकर्षित करने का सिस्टम काम करता है। अर्थात् जैसे हम होते हैं वैसी ही विचारधार के लोगों को हम अपनी ओर आकर्षित करते हैं यानि वैसे ही लोग हमारे आसपास नजर आते हैं। आपने देखा होगा कि इस समाज में बिना ज्यादा प्रयास किये चोरों को चोरों की सोसाइटी मिल जाती है, स्मैकची अपने जैसे स्मैकची ढूंढ लेते हैं। एक मरीज को अपने जैसे दूसरे मरीज का साथ मिल जाता है। इसी प्रकार एक अच्छा पुलिस ऑफिसर दूसरे अच्छे पुलिस ऑफिसर के साथ पाया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि पहिले हम यदि अपने विचार अच्छे रखकर, एक सफल इंसान बनेंगे तभी हम अपने साथ दूसरे सफल इंसानों का संगठन बना पायेंगे।

सफलता के Take & Give के नियम के अनुसार हमारे पास जो वस्तु नहीं है, हम उसे दूसरों को नहीं दे सकते । यदि हमारे पास

पैसा नहीं है तो हम दूसरों को पैसा नहीं दे सकते, हमारे पास चरित्र नहीं है तो हम चरित्र नहीं दे सकते, यदि हम खुद खुश नहीं है तो हम दूसरों को खुश नहीं रख सकते, हम खुद सफल नहीं हैं तो हम दूसरों को सफल कैसे कर सकते हैं। यही कारण है कामयाबी, कामयाबी को बढ़ाती है। नाकामयाबी, नाकामयाबी को जन्म देती है। उत्साह, उत्साह को बढ़ता है तो उदासी, उदासी को बढ़ाती है। झगड़ा, झगड़े को बढ़ाता है तो खुशी, खुशी को बढ़ाती है। दोनों ही पहलूओं के जिम्मेदार हम हैं क्योंकि हम ही नकारात्मक या सकारात्मक विचारों को अपने अंदर जाने की अनुमति देते हैं।

दपर्ण के टुकड़े-टुकड़े कर दो,
दपर्ण तो अपना फर्ज निभायेगा।
और जिस टुकड़े में भी देखेंगे,
आपको अपना ही हुलिया नजर आयेगा।

□□□

अध्याय-5

सफलता दिलाने वाले सीक्रेट्स

हर व्यक्ति के लिए जीवन में सफलता का अर्थ अलग-अलग होता है। एक मजदूर के लिए 100/- की दिहाडी प्राप्त कर लेना सफलता हो सकती है तो एक स्टूडेंट के लिए पढ़-लिखकर अच्छा जॉब (सर्विस) प्राप्त कर लेना सफलता हो सकती है, तो किसी के लिए एक अच्छा व्यवसाय स्थापित कर लेना सफलता हो सकता है तो किसी के लिए अपना अच्छा प्रोफेशन (डॉक्टर, वकील, सी.ए. इत्यादि) की प्रैक्टीस बढ़ा लेना सफलता हो सकती है। किसी के लिए ढेर सारी दौलत अर्जित करना सफलता है तो किसी के लिए सम्मान प्राप्त करना ही सफलता में आता है। किसी के लिए अच्छे-अच्छे काम करना सफलता है तो किसी के लिए अच्छी सेहत, शरीर, बना लेना सफलता में आता है। तो कोई अपने परिवार में रहकर सुख व दिलो दिमाग का चैन प्राप्त करना सफलता समझता है। अर्थात् जीवन को और अधिक मूल्यवान बनाने के लिए निर्धारित लक्ष्यों को लगातार प्राप्त करते चले जाना ही सफलता है। जीवन में जिस किसी चीज की भी कमी या अभाव महसूस होता हो उसे प्राप्त कर लेने के पश्चात् महसूस की गई आत्म-संतुष्टि और खुशी या अहसास ही सफलता है। मोटे रुप में जीवन से 'काश' शब्द हटा देना सफलता है।

1. जानिये कि अपनी सोच को बड़ा कैसे रखें ?

जब सफलता व्यक्ति की सोच पर निर्भर करती है तो स्वाभाविक है कि बड़ी सफलता के लिए सोच का बड़ा होना आवश्यक है। हमारे मस्तिष्क को छोटा सोचने की आदत पडी हुई है। हमारी इस आदत के कारण ही हम अक्सर अपने आप को कम आंककर, दूसरे लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं यानि हमारे अंदर खुद को दीन-हीन देखने की कमी भरी रहती है। खुद को सस्ते में बेचने की कमजोरी दूर कर लेने से दूसरों की नजर में अपनी वैल्यू बढ़ाई जा सकती है। अपनी सोच को बड़ा करने के लिए हम बड़ी मानसिकता वाले सकारात्मक शब्दों व वाक्यों को बोलकर, दोहराकर, सोच को बड़ा कर सकते हैं। **एम.एल.ए. या एम.पी. बनना अच्छी बात है परन्तु राज्य का माननीय राज्यपाल या मुख्यमंत्री तथा भारत देश का माननीय राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनना हमारी बड़ी सोच को दर्शाता है। आई.ए.एस. या आई.पी.एस. बनना अच्छी सोच है मगर मुख्य सचिव या महानिदेशक पुलिस बिना बड़ी सोच के नहीं बना जा सकता है। व्यावसायी बना जा सकता है परन्तु दुनियाँ को मुठ्ठी में करने वाला व्यावसायी बनना हमें बड़ी सोच के माध्यम से बड़ी सफलता अर्जित करना सिखाता है।**

साधारण डॉक्टर, वकील, अन्य कोई भी प्रोफेशनलिस्ट बना जा सकता है, परन्तु विशेषज्ञ बनना हमारी बड़ी सोच को दर्शाता है। याद रखिये **किसी भी क्षेत्र का साधारण ज्ञान आपको साधारण लोगों की ही श्रेणी में बनायें रखता है मगर किसी एक क्षेत्र का भी विशिष्ठ ज्ञान आपको चुनिन्दा लोगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है।**

जिस प्रकार दो, पाँच सौ रु. कमाने की सोच रखकर करोड़ रु. नहीं कमाये जा सकते। करोड़ रुपये कमाने के लिए करोड़ों कमाने की सोच का होना जरूरी है। उसी प्रकार अपने-अपने क्षेत्र के सर्वोच्चय पद और विशेषज्ञता हॉसिल करने के लिए बड़ी सोच का होना जरूरी है।

अमीर आदमी, अमीर क्यों है क्योंकि वह अमीर की तरहां सोचता है, गरीब आदमी, गरीब क्यों है, क्योंकि वह गरीब की तरहां सोचता है। यदि अमीर आदमी, गरीब की तरहां सोचने लग जायेगा तो वह भी गरीब बन जायेगा। इसके विपरीत यह भी सही है कि यदि गरीब आदमी अमीर की तरहां सोचने लग जायेगा तो वह भी अमीर बन सकता है। **कहते हैं मजदूर पैसे से गरीब नहीं होता वह सोच से गरीब होता है। मगर एक सुन्दर ताजमहल बनाने वाला इंसान मेहनत, लगन और दिल से काम करने की बड़ी सोच के गुण को अपने मस्तिष्क में रखने वाला होता है। यही गुण उसे मजदूर से कलाकार बना देता है।**
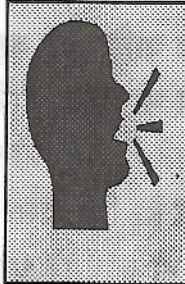
तो किताबे जिन्दगी में एक नया अरमान पैदा कर।

दिलों में हौंसले और हौंसलों में जान पैदा कर।

2. संगत :

सोचिए कहीं आप जंग लगे हुये लोहे के सम्पर्क में तो नहीं है ? मजदूर के साथ ज्यादा समय तक रहने से हमारी सोच भी मजदूर की तरहां बन सकती है। इसी तरहां महत्वाकांक्षी लोगों के साथ रहने से महत्वाकांक्षा बढ़ जाती है। हमारी संगत हमें बहुत ज्यादा प्रभावित करती है। हमारा महौल ही हमारे दीमाग में कार्य करने के तौर-तरीके, चाल-ढ़ाल, रहने-पहनने का सलीका। बोलने-बात करने का ढंग-अंदाज आदि को सिखाता है। **हमारे व्यक्तित्व पर हमारी संगत का फर्क पड़ता है। विजेताओं की संगत करने से हम विजेता बनते हैं। इंसान जो भी बनना चाहता है ? उसे अपने लक्ष्य से संबंधित क्षेत्र के सफलतम लोगों की संगत करनी चाहिये।** मान लीजिए किसी व्यक्ति को न्यूरोसर्जन बनना है तो उसे एक सफल न्यूरोसर्जन को ढूंढ लेना चाहिये। क्योंकि उसकी संगत और अनुभव उस व्यक्ति को एक सफल न्यूरोसर्जन बनाने के सही तरीके व राह दिखा सकती है। **भविष्य में आप क्या बनेंगे यह आप किस तरह के लोगों की संगत में रहते हैं, पर निर्भर करता है। यदि कोई धनवान बनना चाहता है तो उसे किसी ऐसे धनवान व्यक्ति को खोज लेना चाहिये जो बहुत सा पैसा कमा रहा है। उसकी संगत करने से आप भी सीख जायेंगे कि सफल लोग कैसे कमाते हैं ?** कैसे कपड़े पहनते हैं, कैसे बोलते हैं, कैसे खाते-पीते हैं, यानि उनकी जीवनशैली क्या है? फिर वैसा ही आप भी करने लग जायेंगे और आप भी धनवान हो जायेंगे। **ध्यान रखिये जंगल का राजा शेर यदि बकरी के घर आने-जाने लग जाता**

है तो संगत के असर की वजह से वह भी बकरी की तरहां हरकतें करने लग सकता है।

3. अपने आत्म सम्मान को कैसे ऊँचा उठाये :

जब यह सिद्ध हो चुका है कि जैसे हम हैं वैसे ही लोगों को हम अपनी ओर आकर्षित करते हैं। तो सबसे पहिले हमें अपने आत्म सम्मान को ऊँचा करना चाहिये। आत्म सम्मान दो प्रकार का होता है। (1) Internal Self Imae (2) External Self Image **हम अपने आप को किस रुप में देखते हैं ? दुनियाँ भी हमें उसी रूप में देखेंगी।** आतंरिक सैल्फ इमेज ज्ञान द्वारा बढ़ाई जा सकती है। जबकि बाह्य सैल्फ इमेज रोजाना नाह-धोकर, अच्छे, साफ-सुथरे व प्रेस किये कपड़े पहनकर, टाई आदि लगाकर, बढ़े हुये बालों व नाखूनों को काटकर, बात करने पर मुंह से बदबू नहीं आने देकर, क्लीनशेव बनाकर, चमकते-पालिश किये हुये जूते पहनकर व चेहरे पर मुस्कुराहट के भावों को रखकर अर्थात् आकर्षक दिखने की आदत को विकसित करके, हम अपने बाह्य व्यक्तित्व को चमकदार बना सकते हैं। क्या मैं अच्छा दिखता हूँ ? **अपने मन में अपने आप से पूछे कि क्या मैं दुनियाँ को अपना सर्व श्रेष्ठ रूप दिखा रहा हूँ। अपने मन में सर्व श्रेष्ठ बनने की आकांक्षा रखकर कार्य करना हमारे आत्म सम्मान को बढ़ाता है। जीवन में खुशियाँ और सफलता प्राप्त करने के लिए हमें दूसरों के साथ व्यवहार करना सीखना होता है। हमारा व्यवहार हमारी सैल्फ इमेज को दर्शाता है। हम दूसरों से नम्रता और तहजीब से पेश आकर, उनके साथ अच्छा-व्यवहार करके, उन्हें आदर सम्मान दे**

कर, लोगों की खूबियों का बखान कर हम अपने आत्म-सम्मान को बढ़ा सकते हैं।

जैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ करते हैं बदले में वैसा ही व्यवहार उनसे पाते हैं। अपने चरित्र का हम आत्म विश्लेषण स्वयं करके अपनी इंटरनल सैल्फ इमेज को ऊपर उठा सकते हैं। जब भी चरित्र संबंधी किसी कार्य को करने या ना करने का संदेह मन में उत्पन्न हो जाये तो अपने आप से निम्न दो प्रश्न पूछिये ? यदि इन प्रश्नों का जवाब आपका दिल 'हाँ' (गर्व का कार्य) में देता है तो उस कार्य को बेझिझक कर लीजिए और यदि जवाब 'ना' (शर्म का कार्य) में आये तो उस कार्य को चारित्रिक असफलता दिलाने वाला कार्य समझकर तुरन्त छोड़ देना चाहिये।

प्रश्न-1 : मैं जिस कार्य को करने जा रहा हूँ यदि मेरे माता-पिता या परिवार का कोई भी बुजुर्ग सदस्य इस काम को मुझे करता हुआ देख ले तो क्या वह शाबासी देगा या उसकी नजर शर्म से झुक जायेगी ?

प्रश्न-2 : मैं जिस भी काम को करने जा रहा हूँ यदि इसे करते हुये मेरे बच्चे मुझे देख ले तो क्या मैं चाहता हूँ कि वो भी इस काम को करें ?

यह आत्म-विश्लेषण हमारा चरित्र निर्माण करता है यदि हम अपने चरित्र की वजह से स्वयं अपने आप को गोरवान्वित महसूस करते हैं तो दूसरे लोग भी हमें गौरव प्रदान करेंगे। याद रखिए सच्चरित्रता तकदीर बनाती है।

4. लगातार प्रयास :

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार किये गये प्रयासों से सफलता मिलती है। **दुनियाँ में ज्यादातर लोग असफल इसलिए होते हैं, क्योंकि लोग थोड़ी सी बाधा या अस्थाई पराजय आते ही या तो काम छोड़ देते है या रास्ता बदल लेते हैं। कोई भी अच्छा काम आसान नहीं होता है। बाधाएँ तो आयेगी ही हमें उन्हें जीतने के उपाय सोचने चाहिये ना कि उनकी वजह से मैदान छोड़ देना चाहिये, बाधाओं से डर कर भागने से पहले संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञ से सलाहा लेना कामयाबी दिला देता है।**

यह सत्य है कि जो बीच राह में बैठ गये वो बैठे ही रह जाते हैं, जो लगातार चलते रहते, वो निश्चय ही मंजिल पाते हैं, वैसे भी यह तो हमने सीखा ही है कि लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

कहते हैं सही कार्य करने के साथ जब भी सही समय आने का मिलन होता है, तब सफलता प्राप्त होती है। मगर सही कार्य करते रहना हमारे हाथ में है परन्तु सही समय लाना भगवान के हाथ में है। अतः सही कार्य करते रहिये, करते रहिये, कार्य करते रहिये जब भी सही समय आयेगा सफलता आपके कदम चूमेंगी।

5. सफलता की आदत है डराना हमें सीखना है अपने आपको गिरकर उठाना :

चाँद पर जाना आसान नहीं था मगर फिर भी इंसान पहुँच गया।

हिमालय को फतेह करना आसान नहीं था मगर ताज्जुब महिलाओं ने ही फतेह कर दिखाया। ऐसी बहुत सी दुर्लभ कामयाबियाँ मनुष्य ने प्राप्त कर ली हैं। **याद रखिये सफलता की आदत है कि वह प्राप्त होने से पहले डराती है, लम्बे-लम्बे दाँत दिखाती है, घने जंगलों में छुप जाती है, कभी सात समुद्र पार नजर आने लगती है, तो कभी मृग मारीचिका बन जाती है। सफलता जीवन में चैलेन्ज देती हुई आती है। मगर सफलता प्राप्त होने के बाद यही सफलता कोमल व खुशबुदार फूलों का हार पहनवाती है। शोहरत दिलाती है, इतिहास में नाम अमर करा देती है। पैसा इतना दिलाती है कि इंसान सोचने लगता है कि जरूरत के समय यह पैसा कहां छुपा हुआ था। देश-विदेश की यात्रा कराती है और अपनों से भी ज्यादा चाहने वाले दोस्त बना देती है। मगर सफलता मिलती उन्हीं को है जो सफलता को ढूंढ निकालते हैं।** कहते हैं बिजली का बल्ल बनाने में महान आविष्कारक थॉमस एडीसन साहब को कितनी ही बार असफलता का सामना करना पडा था। अमेरिका के राष्ट्रपति बनने से पहिले अब्राहिम लिंकन साहब को अनेक बार चुनाव हारने पडे थे। असफलता चिरकालीन नहीं होती है। **हर असफलता में कहीं ना कहीं उससे बड़ा सफलता का बीज छुपा होता है। असफलता को पहचानने से मना करने वाले लोग आगे चलकर बड़ी सफलता हॉसिल करते हैं।**

दो पहलवान कुश्ति लड़ रहे थे। लडते-लडते एक पहलवान जमीन पर गिर पडा। रैफरी ने गिरे हुये पहलवान की तरफ देखकर उसे उठने का मौका देते हुये वन-टू-थ्री बोलकर प्रेरित किया। मगर

गिरा हुआ पहलवान नहीं उठ सका। उपस्थित दर्शकों ने खड़े हुये पहलवान को विजेता घोषित कर दिया। थोड़ी देर बाद जब गिरे हुये पहलवान से पूछा गया कि आपकी हार का कारण– क्या आप गिर गये थे इसलिए हार गये? पहलवान ने कहा नहीं मैं इसलिए नहीं हारा कि मैं गिर गया था। कुश्ति में गिरना पड़ना तो होता ही रहता है। मैं इसलिए हारा कि मैं गिरकर उठा नहीं था। कहते है कि इंसान पानी में कूदने या गिरने से नहीं मरता है, बल्कि वह बहुत समय तक पानी में पड़े रहे या डूबे रहने की वजह से मरता है।

असफलता ही हमें आत्मनिरीक्षण एवं अपने प्रयासों का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती है। यही सृजनात्मक शक्ति हमें अपने लक्ष्य के नजदीक ले जाती है। **कोई भी असफलता स्थाई नहीं होती है। हर असफलता में सफलता का एक नया मार्ग छुपा होता है।**

याद कीजिए प्रेरणा प्रदान करने वाली पंक्तियाँ कि असफलता एक चुनौति है इसे स्वीकार करों क्या कमी रह गई देखों और सुधार करों। जब तक ना हो सफल नींद चैन की त्यागों तुम। संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागों तुम। कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। अफसलता हमें सफल होने के लिए शिक्षित व प्रेरित करती है। प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करके हम नये मार्ग खोज सकते हैं। राहिनों मैंटेलिटी को अपनाकर ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि गैंडा एक बार अपने लक्ष्य को चुनने के बाद, उसे टक्कर माकर यानि उसे पूरा करके ही, पीछे हटता है। **चाहे परेशानियाँ कितनी भी आ जाये लम्बे**

समय तक रूके रहने से ही कामयाबी हॉसिल होती है। जो मंदी के समय में टिके रहते हैं वो ही तेजी के समय में कमाते हैं। ध्यान रखिये यदि आप सफलता को नहीं अपनायेंगे तो असफलता आपको अपना लेगी।

शमां अगर बुझ जाये तो जल सकती है।
कश्तियाँ हदें तूफां से निकल सकती है।
मेरे दोस्त, मायूस ना हो इरादे ना बदल।
तकदीर किसी वक्त भी बदल सकती है।
मगर,
तलाशें प्यार में जो ठोकरे खाया नहीं करते।
वो मंजिले मकसूद पाया नहीं करते।

□□□

अध्याय-6

जानी मानी गई शक्तियाँ

यूं तो अपने चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास के लिए सीखा गया छोटा से छोटा प्रत्येक गुण या अच्छाई बहुत महत्व रखता है। क्योंकि **एक विचार अपने जैसे दूसरे समान विचारों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । अतः अच्छाइयाँ, अच्छाइयों को बढ़ाती हैं। बुराइयाँ, बुराइयों को जन्म देती हैं। इंसान चाहे तो किसी भी एक अच्छाई को अपने अंदर अपार सीमा में बढ़ाकर उसके सहयोग से समस्त अच्छाइयों को आकर्षित कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है।** अपने मस्तिष्क को अच्छे विचारों और आदर्शों से भरने के लिए निम्नलिखित अच्छाइयाँ महान शक्तियों के रूप में जानी और मानी जाती है :–

1. संगठन की शक्ति :

विजेताओं की टीम में सम्मलित होइये और विजेताओं को अपनी टीम में सम्मलित कीजिए। TEAM : Together Ever Achieve More संगठन की शक्ति को बताने के बहुत से उदाहरण्ा किताबों से जरूर पढ़े होंगे कि एक लकड़ी को तोडा जा सकता है पर गट्ठर को तौड़ना मुशिक्ल है। ढेर सारे कबूतर उस जाल को ही लेकर उड़ गये जिस जाल में वो फँसे हुये थे। अकेली चिड़िया यदि 4 मील उड़ सकती है तो वो ही चिड़ियाएँ 'वी' फोरमेशन में 400 मील से भी ज्यादा उड़ जाती हैं। हमारे भारत में यह कहावत भी है– 'अकेला चना भाड़ नहीं

फोड़ सकता" यानि बहुत सारे सफल लोग मिलकर असंभव कार्य को भी संभव बना सकते हैं। इन सबका अर्थ यह निकलता है कि **संगठन में रहने से हमारी बढ़ने की प्रेरणा बनी रहती है। इससे हम एक ना एक दिन कामयाब हो जाते हैं। जिस प्रकार पोखर व गड्ढे सूख सकते है, मगर समुद्र नहीं सूखा करते। उसी प्रकार संगठन रूपी समुद्र में रहने से हमारी समृद्धि और सफलता का श्रोत बना रहता है।**

एक-एक बूँद से तालाब बनता है।
एक-एक ईंट से कागार बनता है।
मिलन की अजीब ताकत तो देखों।
एक-एक फूल मिलने से गले का हार बनता है।
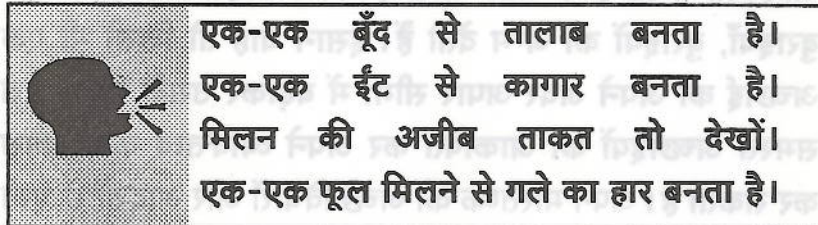
2. समर्पण की ताकत :

झुकने की ताकत को पहचानने के लिए यह जानना जरूरी है कि **आप जिस योग्य गुरू के सामने भी अपने आप को समर्पित करते हैं, उस योग्य गुरू की आपके प्रति जिम्मेदारी ओर अधिक बढ़ जाती है। वैसे भी अपने से महान व्यक्ति को दिया गया सम्मान वापिस से अपने आप को ही सम्मानित कराता है।** अपने क्षेत्र के अच्छे सफल गुरू को तलाश कीजिए और उसके सामने अपने आप को समर्पित कर दीजिए। इससे आपस में अच्छे गुरू व अच्छे शिष्य का अटूट नाता बनता है। याद रखिये कोई भी अच्छा गुरू एक अच्छा शिष्य जरूर रहा होता है। द्रोणाचार्य और पाण्डवों का उदाहरण आज भी इस क्षेत्र में सम्मान से लिया जाता है। दोनों के ही नाम इतिहास में

अमर हैं। द्रोणाचार्य अच्छे गुरू थे और पाण्डव अच्छे शिष्य थे। **अपनी ट्रेनिंग के समय में अच्छी प्रकार सीखने वाला शिष्य ही आगे चलकर अच्छा गुरू बनता है।** सीखने की अभिलाषा रखने वाले इंसान का मस्तिष्क अवसरों को पकड़ने व पहचानने की ताकत रखता है। इसी वजह से हमारे मस्तिष्क में अंदर गया एक शब्द ही हमारा जीवन बदल देता है। सीखने की इच्छा हमारी आस्था की भावना को बढ़ाती है। आस्था और विचार मिलकर प्रार्थना बन जाते हैं। प्रार्थना हमारे अवचेन मस्तिष्क को यह विश्वास दिलाती कि हमें भी हमारी मन चाही सफलता मिल सकती है। याद रखिये जिन विचारों के पीछे प्रबल भावनाएँ होती हैं वो तुरन्त वास्तविकता में बदलना प्रारंभ हो जाती हैं। **हमारा अवचेतन मस्तिष्क किसी भी दृढ़ भावना से भरे विचारों को हकीकत में बदल देता है। सकारात्मक विचारों से युक्त भावनाएँ कामयाबी में बदल जाती हैं तथा नकारात्मक विचारों से युक्त भावनाएँ दुर्भाग्य या नाकामयाबी में बदल जाती हैं।**

आपने भी जरूर सुना होगा कि पैराशूट और दिमाग तभी काम करते हैं जब खुले होते हैं। बारिश हो रही है और बर्तन यदि सीधा खुला है तो भर जायेगा ओर बर्तन यदि उल्टा है तो पानी ऊपर से बह जायेगा।

हम यह तो जानते हैं कि हम क्या जानते हैं ? यदि हम अपने अंदर इसके साथ-साथ यह आदत और विकसित कर लें कि हम और भी बेस्ट से बेस्ट क्या जान सकते हैं ? तो यह आदत हमें सफल इंसानों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सकती है।
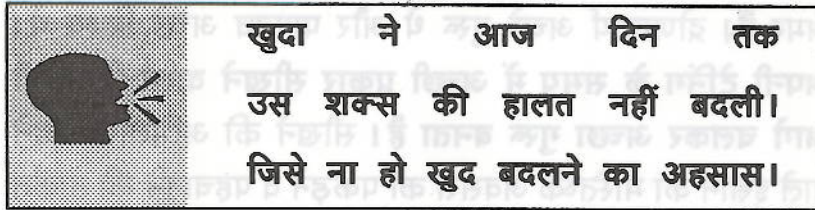
3. बोलने की ताकत :

बोलना सबसे बड़ी ताकत है। कहते हैं इंसान जिस स्तर पर बोलता है उसी स्तर पर जीवन जीता है। सीखिये कि सफल लोग कैसे बोलतें हैं ? वो बोलों जो चाहिये, जो है और जिसे आप नहीं चाहते हैं उसे मत बोलिये। हमारा ब्रह्माण्ड भी शब्दों से भरा हुआ है। यानि शब्द ही बीज हैं। बीज ही बड़ा होकर पेड़ बनता है। भगवान बीज को सही हवा पानी देकर बड़ा कर सकते है। मगर बीज हमें ही बोने पड़ते हैं। **फल बीज में छुपा होता है। भगवान बीज 'बो' नहीं सकते। नकारात्मक या सकारात्मक बीज रोज हम अपनी ही जुबान से बोल-बोलकर बोते रहते हैं। परमात्मा तो बस हर बीज पर 'तथास्तु' की मोहर लगा देता है। और वही बीज एक दिन बड़ा पेड़ बन जाता है।**

अब यदि हम बोलते हैं कि मेरी तो तबियत ही खराब रहती है। मैं तो पढ़ाई में कमजोर हूँ, मेरी तो किस्मत ही खराब है। मैं तो गरीब हूँ। मैं सफल हो ही नहीं सकता, आदि-आदी। तो ध्यान रखिये आपके प्रत्येक बीज पर परमात्मा अपनी तथास्तु की मोहर लगा रहे हैं। बीज बोने की जिम्मेदारी हमारी स्वयं की है और जीवन में शब्दों के बीज ही पेड़ बनते हैं।

98% लोग इस बोलने के रहस्य को नहीं जानते हैं। बोलने से सभी चीजें प्राप्त होती हैं। उदाहरण के लिए सोचिये घर में बच्चा रोज बोलता है

माँ मेरी साईकिल ला दो, पापा मेरी साईकिल ला दो, तो एक दिन उसकी साईकिल आ जाती है।

दूसरे रूप में भी हम देखें तो हम पाते हैं कि शब्द बोलने से वापिस हमारे कानों से, आँखों से, और मुँह के माध्यम से हमारे दिमाग में अंदर चले जाते हैं। हमारा ब्रेन एक कम्प्यूटर की तरहां हैं। यदि कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग गलत करोगे तो डाटा भी गलत निकलेगा। अर्थात् आँखों से नकारात्मक देखने, कानों से नकारात्मक सुनने व मुँह से नकारात्मक बोलने से हमारे दिमाग के अंदर कचरा चला जाता है और हमारे दिमाग में भरे कचरे का ढेर बदबू बाहर निकालता रहता है। हमारे समाज में सकारात्मक बोलने की शिक्षा कई उदाहरणों से सीखने को मिलती है। आपने सुना होगा हम दुकान बंद करने को बोलते हैं कि दुकान बढ़ा दो। किसी का स्वर्गवास हो जाने पर कहते हैं कि आदमी चढ़ाई कर गया। दीपक बुझाने को कहते हैं कि दीपक बढ़ा दो। अर्थात् जो नहीं चाहिये उसे पास्ट टेन्स में 'था' लगाकर बोलना चाहिए। मेरी तबियत खराब थी, अब मैं ठीक हो गया हूँ। मैं गरीब था अब धनवान बन गया हूँ। इसके विपरीत जो चीज आपके पास नहीं है और आपको चाहिये उसे प्रेजेंट टेन्स में बोलना व विज्यूवलाइज करना चाहिए– कि लो मेरा मकान बन भी गया, लो मेरा कर्जा उतर भी गया, लो मैने सफलता प्राप्त कर भी ली, लो मेरी गाड़ी आ भी गई, लो मैं अपने मन चाहा इंसान बन भी गया। लो करोड़ों रू. मैंने कमा भी लिये, लो मैं अमीर हो भी गया ......।

इस प्रकार अपने मुँह से बार-बार बोलने व आँखे बंद करके ध्यान करने की इस पद्धति को अपनाकर हमं अपने अवचेतन मस्तिष्क को सशक्त भावनाएँ प्रदान करते हैं। इन भावनाओं से

हमारा अवेचन मस्तिष्क प्रेरित होकर दृढ़ विश्वास कायम कर लेता है और जिस भाव पर भी हमारे अवचेन मस्तिष्क को विश्वास हो जाता है वह उसे तुरन्त हकीकत में बदल देता है। तो अब सबसे पहले जोर से बोलिये ।

मैं स्वयं को इतना शक्तिशाली बनाऊँगा कि कुछ भी आ जाये मेरी मानसिक शांन्ति कभी भंग नहीं होने दूँगा। मैं पूर्ण पॉजेटिव रहूँगा। अपने से मिलने वाले व्यक्ति के सिर्फ पॉजेटिव पक्षों को देखूँगा। पॉजेटिव विचार करूँगा। पॉजेटिव बोलूँगा। पॉजेटिव लोगों की संगत करूँगा। मैं स्वयं को इतना सशक्त बनाऊँगा कि कोई भी कठिनाई मेरा रास्ता नहीं रोक सकेगी। मेरे परिवार पर भगवान की बडी कृपा है। मैं भगवान का बहुत अच्छा बच्चा हूँ। मैं सबसे ज्यादा खुश नसीब हूँ। मेरे माता-पिता मुझे बहुत प्यार करते हैं। दुनियाँ की कोई ताकत मुझे कामयाब होने से नहीं रोक सकती। मेरे पास दौलत की कोई कमी नहीं हैं। मैं बड़ी मौज में हूँ। मेरी संगत से लोगों की तकदीर बदल जाती है। मैं खुद सफल हूँ और ओरों को भी सफल करता हूँ। मैं इस किताब को पढ़कर निहाल व मालामाल हो गया। मैं रोज इसे पढ़कर निहाल हो जाता हूँ। मैं रोज इसे पढ़कर मालामाल हो जाता हूँ। मैं जो चाहता हूँ वही बोलता हूँ, और जो बोलता हूँ वही पाता हूँ ।

समुंद्र में अगर डूबे हो तो मैं नाव बन जाऊँ।
अगर हो धूप जीवन में तो मैं छाँव बन जाऊँ।
भटकना इधर-उधर छोड़ों पढ़ो राजे इस पुस्तक को।
अपने दिल दिमाग में बसा लो तो मैं सूरज-चाँद बन जाऊँ।

4. दूसरे जरूरतमंदों के लिए माँगने की ताकत :

एक बार एक तपस्वी खूब घूमने के पश्चात् भी खाने-पीने की व्यवस्था पूरी नहीं होने के कारण दुखी होकर सोचने लगा कि निर्धन मनुष्य का जीवन भार स्वरूप है, आत्महत्या करके शायद अपने जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। अतः जैसे ही तपस्वी आत्महत्या करने वाले थे, उसी समय देवराज इन्द्र एक मृग का रूप रखकर तपस्वी के सामने आ गये और बोले, हे तपस्वी। मनुष्य योनी करोड़ योनियों में सर्व श्रेष्ठ है। सभी प्राणी मनुष्य योनी चाहते हैं। जो तुम्हें परमात्मा ने पहले से ही प्रदान की हुई है। **परमात्मा कभी भी किसी को इतनी समस्या नहीं देता जिसे वह झेल ना सके। निर्धन होना कोई अभिशाप नहीं है। निर्धन व्यक्ति को दुखी होने की आवश्यकता नहीं है। गरीबी का सीधा मतलब होता है योग्यता और महत्वाकांक्षा की कमी। जिसके पास दो हाथ-पैर हैं उसमें सब कुछ करने की सामर्थ्य है।** देखों हम मृगों के पास आपके जैसे हाथ-पैर नहीं है। हमारी भी आपके जैसे हाथ-पाँव प्राप्त करने की इच्छा होती है। जिस प्रकार तुम्हारे पास धन नहीं है मगर तुम धन की इच्छा की पूर्ति नहीं होने के कारण अपना जीवन त्यागना चाहते हों, उसी प्रकार मेरे पास हाथ नहीं है मगर मैं तो इन हाथों की कमी के कारण अपना जीवन नहीं त्यागना चाहता हूँ। **परमात्मा ने जिसे दो हाथ-पैर दिये हैं, उसके पास किसी भी चीज का अभाव नहीं रह सकता, वह किसी भी वस्तु को प्राप्त कर सकता है। आने वाली हर आपत्ति से अपनी रक्षा करके अपने जीवन को आगे बढ़ा सकता है। इंसान चाहे तो इन हाथों से दूसरों की भलाई के अच्छे-अच्छे कर्म करके अपना भाग्य बना सकते हैं।** मृग बोला ! इन हाथों के अभाव के

कारण हमारे शरीर में कीड़े काटते हैं मगर हम उन्हें हटा नहीं सकते। यही नहीं हम मनुष्य की तरहां से बोल नहीं सकते, रो नहीं सकते व हस भी नहीं सकते। फिर भी अपने जीवन से दुखी होकर हम कभी प्राण त्यागने की नहीं सोचते हैं। **अब तुम इन हाथों से इतना काम करो, इतना काम करो कि तुम्हारे पास दु:खी होने का समय ही नहीं बचे।** आत्म हत्या करने वाले को अपनी शेष बची आयु के 10,000 गुणा अधिक समय तक बिना शरीर वाली योनी में बिताने पड़ते हैं। जब हाथ-पाँव के अभाव में ही जीवन जीना बड़ा कठिन हो जाता है तो बिना शरीर के जीवन की कल्पना करना तो घोर पेरशानी पूर्ण मालूम होता है। शरीर अभाव के कारण आत्महत्या करने वाले मनुष्य को भूख-प्यास से तड़फते हुये सैकड़ों वर्षों तक इधर-उधर घूमकर समय बिताना पड़ता है।

हे तपस्वी ! तुम निर्धन होने के करण दुखी मत होओ। इस संसार में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जो पूरी तरह सुखी हो। तुम अपनी निर्धनता के दुखः की सोच को दिल से दूर कर दो। किसी भी मनुष्य को अपने जीवन में इतना असंतुष्ट कभी नहीं होना चाहिये। मैं तुम्हें मनुष्य जीवन को धनी व सुखी बनाने के कुछ सूत्र बताता हूँ :

1. जब भी जीवन में निराशा घेरे तो कुछ गुनगुनाना चाहिये।
2. जब मन दुखी हो तो हँसने के कारण ढूँढने चाहिये।
3. जब दिल बिमार महसूस करे तो काम के उत्साह को दुगना बढा देना चाहिये।
4. जब मन में हीन भावनाएँ उत्पन्न हो तो व्यक्ति को अच्छे सुन्दर कपड़े पहनकर घूमने निकलना चाहिये।

5. यदि निर्धनता का अनुभव हो तो अथाह दौलत कमाने के तरीके के बारे में सोचना चाहिये और यकीन करना चाहिये कि वह दौलत तुम्हें मिल सकती है।
6. अगर असमंजस्य की स्थित पैदा हो तो मन की आवाज को बढ़ा देना चाहिये।
7. अपने जीवन को महत्वपूर्ण बनाने के लिए अपने लक्ष्यों को याद रखकर, उन्हें प्राप्त करने के लगातार प्रयास करते रहना चाहिये। क्योंकि मनुष्य यदि लम्बे समय तक काम में जुटा रहता है तो वह जरूर सफल हो जाता है।
8. अपनी मधुर स्मृतियों तथा सुख के साथ बिताये गये क्षणों को बार-बार याद करते रहना चाहिये। क्योंकि सुख को याद करने से सुख पूर्ण वातावरण बनता है और दुख: को याद करने से दुख: छा जाता है।

तुम इन सूत्रों को अपनी आदत में डालकर अपने दुख: को दूर कर सकते हो। अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हो। **हमारे अंदर चाहे कितनी भी कम योग्यता हो मगर याद रखिये हम सर्वश्रेष्ठ बन सकते हैं।**

जीवित रहने की इच्छा मनुष्य की पहली इच्छा है। इस संसार में प्रत्येक प्राणी भविष्य की आशा में जीवित रहना चाहता है। **जिस प्रकार मनुष्य पहले धन कमाना चाहता है फिर धन कमाने पर राजा बनने की इच्छा करता है, तथा राजा से देवता बनना चाहता है। इन इच्छाओं की पूर्ति मनुष्य जीवन में जीवित रहने पर ही संभव है तथा**

जीवित रहने के लिए इच्छाओं का रहना जरूरी है। इसलिए आत्म-हत्या करके वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। इसी जीवन में दूसरों की भलाई करके मनुष्य धन, अन्न व मोक्ष प्राप्त कर सकता है। शुभ कार्यों के लिए, दूसरों की भलाई के वास्ते माँगा गया धन और अन्न परमपिता परमेश्वर से कई गुणा वृद्धि होकर प्राप्त होता है।

एक फकीर को तुम्हारी ही तरहां गाँव-गाँव घूमने पर भी मुश्किल से एक समय का भोजन नसीब होता था। उसने दुखी होकर परमेश्वर से प्रार्थना की "मुझे सिर्फ एक समय का भर पेट स्वादिष्ट भोजन करा दो।" मगर परमेश्वर ने उस फकीर की अपने खुद के लिए की गई फरियाद को नहीं सुना। और संदेश भेजा कि तुम्हारे नसीब में एक समय का भी भरपेट स्वादिष्ट भोजन करना नहीं है। अत: तुम्हें कुछ नहीं मिल सकता। परन्तु फकीर ने आशा नहीं छोड़ी। जब कुछ समय पश्चात एक तपस्वियों का झुण्ड उस फकीर के निवास के पास से होकर गुजर रहा था तो उस फकीर ने अपनी एक समय का पेट भर स्वादिष्ट भोजन पाने की इच्छा को पूरा करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने हेतु तपस्वियों से अनुरोध किया। फकीर को भर पेट भोजन प्राप्त कराने के लिए तपस्वियों ने उसके लिए भगवान से प्रार्थना की। तपस्वीगण फकीर की इस छोटी सी इच्छा पूर्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हुये आगे चल दिये। भगवान ने इस बार तपस्वियों की प्रार्थना स्वीकार करते हुये, कुछ ही दिनों में फकीर के पास उसकी इच्छानुसार दो थाल स्वादिष्ट भोजन से लगे हुये खाने के लिए भिजवा दिये। फकीर ने उन थालों में से मात्र दो, दो ग्रास भोजन करके शेष भोजन दूसरे भूखे लोगों को बाँट दिया। फकीर द्वारा स्वयं भूखे होने पर

भी खुद भर पेट भोजन नहीं करके दूसरे जरूरतमंद लोगों को भोजन बाँट देने पर एक चमत्कार हुआ और दूसरे दिन फकीर के पास दो थालों के स्थान पर चार थाल स्वादिष्ट भोजन लगे हुये प्राप्त हुये। इन थालों में से भी फकीर ने दो, दो ग्रास खाकर दूसरे भूखे लोगों को बांट दिया और स्वयं के लिए नहीं बल्कि जरूरतमंद भूखे लोगों के लिए भोजन प्राप्त होते रहने की प्रार्थना करता रहा। अब तीसरे दिन से तो यही चमत्कारी भोजन दिन पर दिन बढ़कर 4 थाल से 8 थाल में, 8 से 16 थालों में, 16 से 32 थालों में, 32 से 64 थालों में और 64 से एक दिन हजारों स्वादिष्ट भोजन के थालों के रूप में फकीर को मिलने लगा। फकीर रोजना इनमें से अपनी जरूरत का मात्र एक-दो ग्रास भोजन करता और शेष भोजन गरीब, असहाय, भूखे व जरूरतमंद लोगों में बांट देता। इस प्रकार धीरे-धीरे यह क्रम एक बड़े लंगर में बदल गया। एक दिन जब वो ही तपस्वीगण जिन्होंने फकीर के लिए एक समय का भोजन प्रदान करने की परमेश्वर से प्रार्थना की थी, जब वापिस उस रास्ते से वापिस लौट रहे थे तो उन्होंने देव गुरू बृहस्पति से इतने बडे लंगर बढ़ने का रहस्य पूछा ? **गुरू ने बताया कि यह सही है की इस फकीर की तकदीर में खुद के लिए एक समय का भी स्वादिष्ट भोजन करना नहीं लिखा है मगर यह दूसरे जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन प्राप्त होने की प्रार्थना व प्रयास करता है। अतः इसके माध्यम से जो अन्य जरूरतमंद लोगों के नसीब का उन्हें जो स्वादिष्ट भोजन मिल रहा है, उसे नहीं रोका जा सकता है। इसलिए परमेश्वर को ना चाहते हुये भी इस फकीर के पास रोजाना हजारों थाल स्वादिष्ट भोजन भेजना पड़ता है। इस फकीर की दूसरों के प्रति उदारता के कारण ही दो थाल भोजन एक बड़े लंगर में बदल**

गये हैं। यह इन थालों में से मात्र एक-एक ग्रास भोजन खाकर भी अपना दोनों समय का भर पेट भोजन पा लेता है।

मृग रूपी इन्द्र देव बोले कि हे तपस्वी ! **जो इंसान कठिन समय में भी अपना आत्म साहस बनाये रखते हैं, विचलित नहीं होते, और दूसरों की भलाई के लिए लगातार प्रयासरत रहते हैं। उन्हें कोई ना कोई बड़ी प्रगति का रास्ता मिल ही जाता है।** अब तुम उठो और उसके जीवन को दूसरों की भलाई में लगा दो। कहा जाता है कि जिसके पास कुछ भी नहीं है अगर वह भी एक अंजली जल ही किसी जरूरतमंद को श्रद्धा से पिलाने का विचार मन में ठान कर सेवा करता है तो इस अच्छे विचार के प्रभाव से वह महापुण्य प्राप्त कर सकता है। **अपना स्वार्थ त्यागकर जरूरतमंदों की सेवा करने से मनुष्य की कीर्ति बढ़ती है तथा समय पड़ने पर अन्न, धन, प्राण व धर्म की रक्षा भी होती है।**

तू कब तक यूँ ही हाथ मलता रहेगा।
दिखा दे जमाने को अच्छा इंसान बनकर।
ये किस्मत के चक्कर तो चलते रहेंगे।
मिटा दे असफलता को बलवान बनकर।

□□□

✻ जय हिन्द ✻